

भविष्यवाणी की आत्मा: अगुवाई करना और शिक्षा देना

हबक्कूक की दो पट्टिकाएँ

Jeff Pippenger

2012-10-15

हबक्कूक की दो पट्टिकाएँ 95 में से 3

परिचय: हबक्कूक की दो पट्टिकाओं की नींव

इस श्रृंखला का नाम है “हबक्कूक की दो पट्टिकाएँ।” अब तक हम 1843 और 1850 की चार्टों से कुछ निश्चित सत्यों को ले रहे हैं—इस समय उनका बाइबिल के आधार पर बचाव करने के लिए नहीं, बल्कि यह स्थापित करने के लिए कि एलेन व्हाइट इन सत्यों का समर्थन करती हैं। हमारा दावा यह है कि यदि आप इन आधारभूत सत्यों को अस्वीकार करते हैं, तो आप उसी समय भविष्यवाणी की आत्मा को भी अस्वीकार कर रहे हैं। हम पहले इसे अभिलेख में दर्ज करना चाहते हैं।

मिलरवादी इतिहास और मध्यरात्रि की पुकार की समीक्षा

अपने प्रथम प्रस्तुतीकरण में, हमने मिलेराइटों के इतिहास की रूपरेखा प्रस्तुत की थी—1798 से 1844 तक के मार्गचिह्नों की। अपने पिछले प्रस्तुतीकरण में, हमने विलंब के समय से लेकर 22 अक्टूबर, 1844 को द्वार के बन्द होने तक के इतिहास का अधिक निकटता से अध्ययन किया, और उस समय की पहचान मध्यरात्रि के पुकार के रूप में की। मध्यरात्रि की पुकार इतिहास में एक्सेटर कैम्प मीटिंग में, 12-17 अगस्त, 1844 को प्रवेश करती है, और 22 अक्टूबर, 1844 तक बनी रहती है। विलंब का समय, जो मार्च 1844 में आरम्भ हुआ, मध्यरात्रि की पुकार और उस शुद्धिकरण-प्रक्रिया का भाग है, जिसने एक ऐसी प्रजा को उसकी घोषणा करने के लिए तैयार किया।

हमने आशा की थी कि कल हम इसे आपके हृदयों और मनो में स्थापित कर देंगे। परमेश्वर के वचन में विलंब के समयों के सभी दृष्टांत संसार के अंत के विषय में बोलते हैं। एलेन व्हाइट, 1 कुरिन्थियों 10:11 पर टिप्पणी करते हुए, कहती हैं, “प्राचीन भविष्यद्वक्ताओं में से प्रत्येक ने अपने समय के दिनों की अपेक्षा हमारे दिन के लिए अधिक कहा।” 1 कुरिन्थियों 10:11 कहता है, “और ये सब बातें जो उन पर पड़ीं, दृष्टान्त की रीति पर थीं; और वे हमारी चेतावनी के लिये लिखी गई हैं, जिन पर जगत का अन्त आ पहुँचा है।” मिलरवादियों का इतिहास उस बात का इतिहास है जो संसार के अंत में घटित होगी। विलंब के समय और उसके पश्चात् होने वाली बातों के ये सब बाइबिलीय इतिहास इस बात का चित्रण करते हैं कि मिलरवादी विलंब-काल और मध्यरात्रि के पुकार में क्या घटित होने वाला था। हमें इन बातों को समझने की आवश्यकता है, क्योंकि इतिहास की पुनरावृत्ति होने वाली है।

2520: एलेन व्हाइट की समर्थन-स्वीकृति

हम इन चार्टों पर पहले विषय पर विचार करते रहे हैं, यद्यपि हमने उसका बहुत अधिक उल्लेख नहीं किया है। पहला सिद्धांत, जिसे हम दिखाना चाहते हैं कि एलेन व्हाइट स्पष्ट रूप से अनुमोदित करती हैं, 2520 है। पहली दो प्रस्तुतियाँ हमें यहाँ तक ले आने के लिए अभिकल्पित की गई थीं। कल प्रातः हम इस चार्ट पर “डेली” पर विचार आरम्भ करेंगे।

प्रभु की अगुवाई और शिक्षा को स्मरण रखना

आइए *Life Sketches*, पृष्ठ 196 से आरंभ करें: “भविष्य के लिए हमें किसी बात का भय नहीं है, सिवाय इसके कि हम उस मार्ग को भूल जाएँ जिसके द्वारा प्रभु ने हमारी अगुवाई की है, और हमारी पूर्ववर्ती इतिहास में उसकी शिक्षा को।” भविष्य के लिए एक मसीही को केवल इसी बात का भय होना चाहिए कि वह मार्ग से भटक जाए और

खो जाए। जिस बात के विषय में भयभीत होना है, वह है अनन्त जीवन को प्राप्त न कर पाना। यहाँ, सिस्टर व्हाइट कहती हैं कि भविष्य के लिए हमें किसी बात का भय नहीं है, केवल दो बातों को छोड़कर। यह एडवेंटवाद में भविष्यद्वानी की आत्मा के साहित्य का एक सामान्यतः उद्धृत अंश है, परन्तु विरले ही आप किसी को यह विस्तार से बताते सुनते हैं कि वह किस अगुवाई और किन शिक्षाओं की ओर संकेत कर रही हैं।

हम यह दिखाएँगे कि वह जिस अगुवाई का उल्लेख करती है, वह मिडनाइट क्राय का इतिहास है। मिडनाइट क्राय के इतिहास में, मसीह विलंब के समय, मिडनाइट क्राय के आगमन और उसकी घोषणा में, तथा 22 अक्टूबर, 1844 को द्वार के बंद होने में अगुवाई कर रहा था। उसने उस इतिहास की रचना इस उद्देश्य से की कि वह ऐसे लोगों को उत्पन्न करे जो विश्वास के द्वारा उसके साथ परमपवित्र स्थान में प्रवेश कर सकें। हमें उस विशिष्ट इतिहास को, साथ ही उसकी शिक्षाओं को, भूल जाने से भयभीत रहना चाहिए।

हम यह दिखाएँगे कि एक विशिष्ट शिक्षा थी जिसने मध्यरात्रि की पुकार उत्पन्न की। वह शिक्षा 11 अगस्त, 1840 को उस्मानी साम्राज्य का पतन नहीं थी, और न ही मृतकों की अवस्था थी, जो मिलेराइट इतिहास में दूसरे स्वर्गदूत के संदेश के इतिहास में आई थी। वह मिलेराइट इतिहास में एक विशिष्ट शिक्षा थी जिसने मध्यरात्रि की पुकार उत्पन्न की, जहाँ प्रभु ने अगुवाई की, और भविष्य के लिए हमें किसी बात से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है, सिवाय इसके कि हम उसकी अगुवाई और उसकी शिक्षा को भूल जाएँ।

हम यह सुझाव देते हैं कि उनके नेतृत्व और उनकी शिक्षा—दोनों का प्रतीक मध्यरात्रि की पुकार है। आइए, एलेन व्हाइट के प्रथम दर्शन से इस अंश को फिर पढ़ें: “इस मार्ग पर एडवेंट लोग उस नगर की ओर यात्रा कर रहे थे जो मार्ग के दूरवर्ती छोर पर था। मार्ग के आरम्भ में उनके पीछे एक उज्ज्वल ज्योति स्थापित की गई थी, जिसके विषय में एक स्वर्गदूत ने मुझसे कहा कि वह मध्यरात्रि की पुकार थी। यह ज्योति समस्त मार्ग पर प्रकाशमान रहती थी, और उनके पाँवों के लिए प्रकाश देती थी, ताकि वे ठोकर न खाएँ। यदि वे अपनी दृष्टि यीशु पर स्थिर रखते, जो उनके ठीक आगे होकर उन्हें नगर की ओर ले जा रहे थे, तो वे सुरक्षित थे। परन्तु शीघ्र ही कुछ थक गए, और कहने लगे कि नगर बहुत दूर है, और उनकी यह आशा थी कि वे उसमें इससे पहले प्रवेश कर चुके होते। तब यीशु अपनी महिमामय दाहिनी भुजा उठाकर उन्हें प्रोत्साहित करते, और उनकी भुजा से एक ज्योति निकलती जो एडवेंट मंडली के ऊपर लहराती, और वे ‘हालैलूयाह!’ पुकार उठते। अन्य लोगों ने उतावली में अपने पीछे की उस ज्योति का इन्कार किया, और कहा कि वह परमेश्वर नहीं था जिसने उन्हें इतनी दूर तक पहुँचाया था।”

वे मध्यरात्रि की पुकार का इंकार कर रहे हैं, और मध्यरात्रि की पुकार के संबंध में वे यह तर्क कर रहे हैं कि प्रभु उन्हें मध्यरात्रि की पुकार में अगुवाई नहीं कर रहा था। वे मध्यरात्रि की पुकार में परमेश्वर की अगुवाई का इंकार कर रहे हैं। “उनके पीछे का प्रकाश बुझ गया, जिससे उनके पाँव घोर अंधकार में रह गए, और वे ठोकर खाकर लक्ष्य और यीशु दोनों की दृष्टि खो बैठे, और मार्ग से नीचे गिरकर नीचे के अंधकारमय और दुष्ट संसार में जा पड़े।”

परिप्रेक्ष्य में मध्यरात्रि की पुकार

2520 पर विचार करने से पहले, उसे संदर्भ में रखने के लिए हम एक बार फिर मध्यरात्रि के पुकार के इतिहास पर दृष्टि डालेंगे।

द ग्रेट कंट्रोवर्सी, पृष्ठ 391-395 से: “जब वह समय बीत गया, जिस पर प्रभु के आगमन की पहली अपेक्षा की गई थी, अर्थात् 1844 के वसंत में,”—यही विलंब का समय है, पहली निराशा—“तब जिन्होंने विश्वास में उसके प्रकट होने की बाट जोही थी, वे कुछ समय तक संदेह और अनिश्चितता में पड़े रहे। जबकि संसार उन्हें सर्वथा पराजित मानता था और यह सिद्ध समझता था कि वे एक भ्रम को पाले हुए थे, तब भी उनकी सांत्वना का स्रोत परमेश्वर का वचन ही बना रहा। बहुतों ने पवित्रशास्त्रों की खोज जारी रखी, अपने विश्वास के प्रमाणों की नए सिरे से जाँच की, और अधिक प्रकाश प्राप्त करने के लिए भविष्यवाणियों का सावधानीपूर्वक अध्ययन किया।”

यदि बहुतों ने ऐसा किया, तो इसका अर्थ है कि कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने ऐसा नहीं किया। यहाँ “वे” नहीं कहा गया; “बहुतों” कहा गया है—अर्थात् यहाँ दो वर्ग हैं। “उनकी स्थिति के समर्थन में बाइबल की गवाही स्पष्ट और निर्णायक प्रतीत होती थी। ऐसे चिन्ह, जिनमें भूल होने की कोई संभावना न थी, मसीह के आगमन के निकट होने की ओर संकेत करते थे। पापियों के परिवर्तन में तथा मसीहियों के बीच आत्मिक जीवन के पुनरुत्थान में, प्रभु के विशेष आशीष ने यह साक्ष्य दिया था कि वह सन्देश स्वर्ग से था। और यद्यपि विश्वासी अपनी निराशा का स्पष्टीकरण नहीं कर सकते थे, तथापि उन्हें यह निश्चय था कि उनके अतीत के अनुभव में परमेश्वर ने ही उनका मार्गदर्शन किया था।

उन भविष्यवाणियों के साथ, जिन्हें वे द्वितीय आगमन के समय पर लागू होने वाली मानते थे, ऐसी शिक्षा भी अंतर्निहित थी जो उनकी अनिश्चितता और उत्कंठापूर्ण प्रतीक्षा की अवस्था के लिए विशेष रूप से उपयुक्त थी, और उन्हें विश्वास में धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करने के लिए प्रोत्साहित करती थी कि जो बात उस समय उनकी समझ के लिए अंधकारमय थी, वह उचित समय पर स्पष्ट कर दी जाएगी।

उस अनुच्छेद में यह कहा गया है, “उन भविष्यवाणियों के साथ गुँथी हुई, जिन्हें उन्होंने दूसरे आगमन के समय पर लागू होने वाली समझा था . . . ।” वे कौन-सी भविष्यवाणियाँ थीं, जिन्हें वे दूसरे आगमन पर लागू मानते थे? 2520, 2300, और 1335। वे विश्वास करते थे कि ये तीनों समय-संबंधी भविष्यवाणियाँ 1843 में समाप्त होती हैं, और वही दूसरा आगमन था।

इन भविष्यवाणियों में हबक्कूक 2:1-4 की यह भविष्यवाणी भी थी: “मैं अपनी मीनार पर खड़ा रहूँगा, और गढ़ पर ठहरूँगा, और यह देखने के लिए जागता रहूँगा कि वह मुझसे क्या कहेगा, और जब मैं ताड़ना पाऊँ तब मैं क्या उत्तर दूँगा। तब यहोवा ने मुझे उत्तर दिया, और कहा, दर्शन को लिख, और पटियाओं पर स्पष्ट रीति से अंकित कर, ताकि जो उसे पढ़े वह दौड़ सके। क्योंकि यह दर्शन अभी नियुक्त समय के लिये है, परन्तु अन्त में वह बोलेगा, और झूठा न ठहरेगा; चाहे उसमें विलम्ब हो, तौभी उसकी बात जोह, क्योंकि वह निश्चय अवश्य पूरी होगी, वह देर न करेगी। देख, उसका मन जो फूल उठा है, वह उसके भीतर सीधा नहीं; परन्तु धर्मी जन अपने विश्वास से जीवित रहेगा।”

1842 में ही, इस भविष्यवाणी में दिया गया यह निर्देश कि “दर्शन को लिख, और उसे पटियाओं पर स्पष्ट कर दे, ताकि पढ़नेवाला दौड़ सके,” चार्ल्स फिच के लिए दानियेल और प्रकाशितवाक्य के दर्शनों को चित्रित करने हेतु एक भविष्यवाणी-संबंधी चार्ट तैयार करने का संकेत बना। इस चार्ट का प्रकाशन हबक्कूक को दी गई आज्ञा की पूर्ति माना गया। तथापि, उस समय किसी ने यह ध्यान नहीं दिया कि उसी भविष्यवाणी में दर्शन की पूर्ति में एक प्रकट विलंब—एक ठहरने का समय—भी प्रस्तुत किया गया है। निराशा के बाद, यह पवित्रशास्त्र का वचन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रतीत हुआ: “क्योंकि यह दर्शन अभी नियत समय के लिये है, परन्तु अन्त में वह बोलेगा और मिथ्या न ठहरेगा; चाहे उसमें विलंब हो, तौभी उसकी बात जोह; क्योंकि वह निश्चय पूरा होगा, वह देर न करेगा। . . . धर्मी जन अपने विश्वास से जीवित रहेगा।”

1843 का चार्ट और भविष्यवाणी की आत्मा

इससे कोई अंतर नहीं पड़ता कि आप नियमित कार्य करते हैं या अनियमित कार्य—ये वे शब्द हैं जिनका प्रयोग एलेन व्हाइट क्रमशः कॉन्फ्रेंस कार्य और स्व-समर्थित कार्य के लिए करती हैं। चाहे आप एडवेंटिज़्म में अग्रणी स्व-समर्थित सेवाकार्यों के पास जाएँ, अथवा जनरल कॉन्फ्रेंस या बिब्लिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट के पास, यदि आप उनसे 1843 चार्ट के विषय में पूछें, तो वे कहेंगे, “इस चार्ट में बहुत-सी गलतियाँ हैं।” वे एलेन व्हाइट से असहमत हैं, जो कहती हैं कि प्रभु ने इस चार्ट के कुछ अंकों में “एक गलती” पर अपना हाथ रखा था।

परन्तु वे अपने आप को परमेश्वर के वचन के विरोध में भी खड़ा करते हैं। हबक्कूक में कहा गया है कि यह दर्शन “झूठ न ठहरेगा।” जिस दर्शन को पायनियरों को 1843 चार्ट पर रखना था, और उन्होंने रखा भी, वह हबक्कूक 2 की पूर्ति है। यही वह दर्शन है जिसे उन्हें इस चार्ट पर रखना था, और हबक्कूक 2 कहता है कि यह दर्शन “झूठ न ठहरेगा।”

इसलिए, जब आप कहते हैं कि यह चार्ट “त्रुटियों से भरा हुआ” है, तब आप भविष्यद्वाणी की आत्मा और बाइबल—दोनों का विरोध कर रहे होते हैं।

यहेजकेल की भविष्यद्वाणी का एक भाग भी विश्वासियों के लिए सामर्थ्य और सांत्वना का स्रोत था: “यहोवा का वचन मेरे पास पहुँचा, यह कहते हुए, हे मनुष्य के सन्तान, यह कैसी कहावत है जो तुम इस्राएल देश में कहते हो, कि दिन बढ़ते जाते हैं, और हर दर्शन निष्फल हो जाता है? इसलिए उनसे कह, प्रभु यहोवा यों कहता है। . . . वे दिन निकट हैं, और हर दर्शन की पूर्ति भी। . . . मैं बोलूँगा, और जो वचन मैं कहूँगा वह पूरा होगा; उसमें फिर देर न होगी।” “इस्राएल के घराने के लोग कहते हैं, जो दर्शन वह देखता है वह बहुत दिनों के बाद के लिए है, और वह उन समयों की भविष्यद्वाणी करता है जो बहुत दूर हैं। इसलिए उनसे कह, प्रभु यहोवा यों कहता है; मेरे किसी भी वचन में अब और देर न होगी, परन्तु जो वचन मैं ने कहा है वह पूरा किया जाएगा।” यहजकेल 12:21-25, 27, 28।

आराधकों के दो वर्ग

ध्यान दीजिए कि वह उपासकों के दो वर्गों की बात कर रही है। वह कहती है कि बहुतों ने, जब यह निराशा आई, भविष्यवाणियों का अध्ययन करना जारी रखा, जिससे यह संकेत मिलता है कि एक ऐसा वर्ग भी था जिसने जारी नहीं रखा। इन दोनों वर्गों के भेद पर हमें और अधिक प्रकाश मिलेगा।

हबक्कूक 2:1-4 की पूर्ति यही 1843 का चार्ट और 1850 का चार्ट है। हबक्कूक में भी, पद 4 कहता है कि धर्मी जन अपने विश्वास से जीवित रहेगा, और वह भी जिसका हृदय फूल उठा है। यह उपासकों की दो श्रेणियों का वर्णन कर रहा है। मध्यरात्रि की पुकार का इतिहास उपासकों की दो श्रेणियाँ उत्पन्न करता है, और उन्हीं दो श्रेणियों को हबक्कूक में संबोधित किया गया है।

अगले अनुच्छेद में, हबक्कूक 2 और यहजकेल का उल्लेख करने के बाद, वह वर्गों में से एक की पहचान करती है: “प्रतीक्षा करने वाले।” प्रतीक्षा करने वाले कौन हैं? वे वही हैं जो दानिय्येल 12 को पूरा कर रहे हैं, “धन्य है वह जो प्रतीक्षा करता है, और 1335 तक पहुँचता है।” यही वर्ग प्रतीक्षा करने वालों का है।

प्रतीक्षा करनेवाले आनन्दित हुए, यह विश्वास करते हुए कि जो आदि से अंत को जानता है, उसने युगों के पार दृष्टि डाली थी और, उनकी निराशा को पहले से देखकर, उन्हें साहस और आशा के वचन दिए थे।

हमारी एक बहन का फ़ोन आया था, जो कुछ वर्षों से पूर्वी यूरोप के एक देश में कार्य कर रही थीं। वह वहीं की थीं, संयुक्त राज्य अमेरिका चली गई थीं, और जब उन्होंने इस संदेश को समझा, तब वापस लौट गईं। उन्हें विरोध का सामना करना पड़ा है; उनके पूर्व कलीसियाई परिवार ने उनके देश के नेतृत्व से संपर्क करके “उनके लिए द्वार बंद कर देने” का प्रयास किया है। हाल ही में, प्रभु ने उनके लिए यह द्वार खोल दिया कि वह इस संदेश को समूहों के साथ साझा करें।

उसने आज प्रातः ही फ़ोन किया और बताया कि एक बाधा परिवहन की थी। इस सन्देश को लेकर यात्रा करने और शिक्षा देने के लिए उन्हें एक गाड़ी की आवश्यकता थी, परन्तु उनके पास धन नहीं था। जैसे ही वे इस स्थान पर पहुँचे, संयुक्त राज्य अमेरिका से मित्रों ने, प्रभु से प्रेरित होकर, एक गाड़ी खरीदने के लिए पर्याप्त धन भेज दिया।

यह उसी प्रकार का अनुभव था जो निराश हुए लोगों के साथ घटित हो रहा था। वे निराश थे, परन्तु प्रभु ने उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए पवित्रशास्त्रों की ओर उनका मार्गदर्शन किया, यह कहते हुए, “यह निराशा मेरी ही व्यवस्था के अनुसार थी। बस आगे बढ़ते रहो।”

यदि पवित्रशास्त्र के ऐसे अंश न होते, जो उन्हें धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करने और परमेश्वर के वचन पर अपने भरोसे को दृढ़ता से थामे रखने की चेतावनी देते थे, तो उस परीक्षा की घड़ी में उनका विश्वास चूक जाता।

दस कुँवारियों का दृष्टान्त और ठहराव का समय

ध्यान दीजिए कि किस प्रकार सिस्टर व्हाइट दस कुँवारियों के दृष्टान्त को हबक्कुक 2 के साथ जोड़ती हैं, क्योंकि दोनों में विलंब के समय और उपासकों के दो वर्गों की चर्चा की गई है।

मत्ती 25 की दस कुँवारियों का दृष्टान्त भी ऐडवेंटिस्ट लोगों के अनुभव को चित्रित करता है। मत्ती 24 में, अपने आने और जगत के अंत के चिन्ह के विषय में अपने चेलों के प्रश्न के उत्तर में, मसीह ने अपने प्रथम आगमन से लेकर अपने द्वितीय आगमन तक संसार और कलीसिया के इतिहास की कुछ अत्यंत महत्त्वपूर्ण घटनाओं की ओर संकेत किया था; अर्थात्, यरूशलेम का विनाश, अन्यजातीय और पोपीय उत्पीड़नों के अधीन कलीसिया का महान क्लेश, सूर्य और चन्द्रमा का अन्धकारमय हो जाना, और तारों का गिरना। इसके पश्चात् उसने अपने राज्य में अपने आने के विषय में कहा, और उस दृष्टान्त को सुनाया जिसमें उन सेवकों के दो वर्गों का वर्णन है जो उसके प्रकट होने की बाट जोहते हैं। अध्याय 25 इन शब्दों से आरम्भ होता है: 'तब स्वर्ग का राज्य उन दस कुँवारियों के समान होगा।' यहाँ अन्तिम दिनों में जीवित कलीसिया को दृष्टि में लाया गया है, "—अब, वह इसे मिलरवादी इतिहास पर लागू कर रही है, पर ध्यान दें कि वह क्या कह रही है—“यहाँ अन्तिम दिनों में जीवित कलीसिया को दृष्टि में लाया गया है, “—“अन्तिम दिनों में जीवित कलीसिया” कौन है? वह हम हैं।

यही बात अध्याय 24 के अंत में संकेतित की गई है। इस दृष्टान्त में उनके अनुभव को एक पूर्वी विवाह की घटनाओं के द्वारा चित्रित किया गया है। “तब स्वर्ग का राज्य उन दस कुँवारियों के समान होगा, जो अपनी-अपनी दीपक लेकर दूल्हे से भेंट करने को निकलीं। उनमें से पाँच बुद्धिमान थीं, और पाँच मूर्ख। जो मूर्ख थीं, उन्होंने अपने दीपक तो ले लिए, पर अपने साथ तेल न लिया; परन्तु बुद्धिमानों ने अपने दीपकों के साथ अपनी-अपनी पात्रियों में तेल भी लिया। जब दूल्हे के आने में देर हुई, तो वे सब ऊँघने लगीं और सो गईं। और आधी रात को यह पुकार मची, देखो, दूल्हा आ गया; उससे भेंट करने को बाहर निकलो।”

पहले स्वर्गदूत के संदेश द्वारा घोषित मसीह का आगमन दूल्हे के आगमन द्वारा निरूपित समझा गया। उसके शीघ्र आगमन की उद्घोषणा के अंतर्गत जो व्यापक सुधार-कार्य हुआ, वह कुँवारियों के निकलकर जाने के अनुरूप था। इस दृष्टान्त में, जैसे मत्ती 24 में, दो वर्गों का प्रतिनिधित्व किया गया है। सबने अपने-अपने दीपक, अर्थात् बाइबल, ले लिए थे, और उसके प्रकाश में दूल्हे से भेंट करने के लिए निकल पड़े थे। परन्तु जब मूर्खों ने अपने दीपक तो लिए, पर तेल नहीं लिया, तब बुद्धिमानों ने अपने पात्रों में तेल लिया। बुद्धिमानों ने परमेश्वर के अनुग्रह को, अर्थात् पवित्र आत्मा की पुनर्जननकारी और आलोकित करने वाली शक्ति को, ग्रहण किया था, जो उसके वचन को उनके पांव के लिए दीपक बनाती है। उन्होंने सत्य को जानने के लिए पवित्रशास्त्र का अध्ययन किया और हृदय तथा जीवन की पवित्रता को गंभीरतापूर्वक खोजा। इनके पास व्यक्तिगत अनुभव तथा परमेश्वर और उसके वचन में विश्वास था, जिसे निराशा और विलम्ब द्वारा पराजित नहीं किया जा सकता था। अन्य लोग केवल आवेग से प्रेरित होकर चले, अपने भाइयों के विश्वास पर निर्भर रहे, अच्छी भावनाओं से सन्तुष्ट रहे, परन्तु सत्य की गहन समझ और अनुग्रह के वास्तविक कार्य से रहित थे। वे विलम्ब और निराशा के लिए तैयार न थे। जब परीक्षाएँ आईं, तब उनका विश्वास चूक गया, और उनके दीपक मंद पड़ गए।

“जब तक दूल्हे ने विलम्ब किया,”

दूल्हा कब विलंबित हुआ? 22 मार्च, 1844. वह विलंब करता है। अब क्या होने वाला है? ये दो वर्ग प्रकट किए जाने वाले हैं।

जब हम मध्यरात्रि की पुकार को भूल जाते हैं और नीचे के दुष्ट संसार की ओर जाने वाले पथ से हट जाते हैं, तो हम यह प्रकट करते हैं कि हम सुसमाचार को नहीं समझते। सनातन सुसमाचार, एक परखने वाले भविष्यद्वाणी-संदेश के आधार पर, मसीह द्वारा दो प्रकार के उपासकों को उत्पन्न करने का कार्य है। ठहराव के समय से लेकर द्वार के बन्द होने तक, यही सनातन सुसमाचार का चरम बिंदु है। यहाँ प्रभु ठहराव के समय में दो वर्गों को लेता है, उन्हें अपने साथ न्याय में ले चलने का प्रयत्न करता है, और उन्हें एक परख की प्रक्रिया से होकर ले जाता है, ताकि यह सिद्ध हो जाए

कि वास्तव में उनके पास तेल है या नहीं। यह मसीह के उस कार्य का चरम है जिसमें वह खरे सोने को मलिनता से, गेहूँ को जंगली घास से, और बुद्धिमानों को मूर्खों से अलग करता है।

“जब तक दूल्हे के आने में देर हुई, तब तक वे सब ऊँघने लगीं और सो गईं।” दूल्हे के विलंब करने के द्वारा उस समय के बीत जाने का संकेत दिया गया है जब प्रभु की अपेक्षा की गई थी, उस निराशा का, और उस प्रतीत होनेवाले विलंब का। इस अनिश्चितता के समय में सतही और अर्धहृदय लोगों की रुचि शीघ्र ही डगमगाने लगी, और उनके प्रयत्न शिथिल पड़ने लगे; परन्तु जिनकी आस्था बाइबल के व्यक्तिगत ज्ञान पर आधारित थी, उनके पैरों तले ऐसी चट्टान थी, जिसे निराशा की लहरें बहाकर नहीं ले जा सकती थीं। “वे सब ऊँघने लगीं और सो गईं;” एक वर्ग निश्चितता में और अपनी आस्था को छोड़ देने की दशा में, और दूसरा वर्ग धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करता हुआ, जब तक कि अधिक स्पष्ट प्रकाश न दिया जाए। तौभी परीक्षा की उस रात में बाद वाला वर्ग भी कुछ सीमा तक अपना उत्साह और समर्पण खोता हुआ प्रतीत हुआ। अर्धहृदय और सतही लोग अब अपने भाइयों की आस्था पर आश्रित नहीं रह सकते थे। प्रत्येक को अपने लिए स्वयं खड़ा रहना था या गिरना था।

जब वह निराशा आई, तब दो वर्ग भिन्न-भिन्न प्रकार से सोने लगे; परन्तु बुद्धिमान कुँवारियों ने भी अपना कुछ उत्साह खो दिया। प्रभु इसमें अगुवाई कर रहा था, ताकि जब एक्सेटर कैम्प-मीटिंग में आधी रात की पुकार का संदेश आया, तब वह उनके बीच एक कार्य सम्पन्न करे।

परीक्षा की प्रक्रिया: विलम्ब का समय और मध्यरात्रि का पुकारा जाना

स्पिरिट ऑफ प्रोफेसी, खंड 4, पृष्ठ 228 से: स्मरण रखो कि यह प्रक्रिया—मध्यरात्रि का पुकार, विलंब के समय से लेकर द्वार के बंद हो जाने तक—प्रभु द्वारा अपनी प्रजा की परीक्षा लेना है। एक्सेटर शिविर-सभा में मध्यरात्रि की पुकार, 22 अक्टूबर 1844 तक उसकी घोषणा के क्रम में, उस इतिहास का केवल एक भाग है। इसे विलंब के समय से अलग नहीं किया जा सकता, जो उपासकों के दो वर्गों के बीच मध्यरात्रि की पुकार के प्रभाव के लिए तैयारी करता है। तुम्हें मध्यरात्रि की पुकार को समझना ही होगा, क्योंकि यदि तुम ऐसा नहीं करते, तो तुम पथ से गिर पड़ते हो।

“परमेश्वर ने अपने लोगों को परखने का अभिप्राय किया था। उसका हाथ भविष्यवाणी की अवधियों की गणना में हुई एक त्रुटि पर पड़ा रहा। उसका हाथ, अर्थात् प्रभु का हाथ, भविष्यवाणी की अवधियों की गणना में, बहुवचन में, हुई एक विलक्षण त्रुटि पर पड़ा रहा। एडवेंटवादियों ने उस त्रुटि का पता नहीं लगाया, और न ही उनके सबसे विद्वान विरोधियों ने उसे खोज निकाला। बाद वालों ने कहा, ‘भविष्यवाणी की अवधियों की आपकी गणना सही है। कोई महान घटना घटित होने ही वाली है; परन्तु वह वह नहीं है जिसकी श्री मिलर भविष्यवाणी करते हैं; वह संसार का परिवर्तन है, और मसीह का दूसरा आगमन नहीं।’”

प्रतीक्षा का समय बीत गया, और मसीह अपनी प्रजा के उद्धार के लिए प्रकट नहीं हुए। जिन्होंने सच्चे विश्वास और प्रेम के साथ अपने उद्धारकर्ता की बाट जोही थी, उन्होंने गहन कटु निराशा का अनुभव किया। तौभी प्रभु ने अपना उद्देश्य सिद्ध कर लिया था: उन्होंने उन लोगों के हृदयों की परीक्षा की थी जो यह दावा करते थे कि वे उनके प्रकट होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। उनमें बहुत-से ऐसे थे जो सत्य के प्रति प्रेम से अधिक भय से प्रेरित थे। जब अपेक्षित घटना घटित न हुई, तो इन लोगों ने घोषित किया कि वे निराश नहीं हुए थे; उन्होंने कभी विश्वास ही नहीं किया था कि मसीह आएँगे। वे सच्चे विश्वासियों के शोक का उपहास करनेवालों में सबसे पहले थे।

यह प्रभु का उद्देश्य था। भविष्य के लिए हमें किसी बात का भय नहीं है, सिवाय इसके कि हम भूल जाएँ कि प्रभु ने हमारे बीते हुए अनुभव में हमारी अगुवाई कैसे की है, और किसी बात का भय नहीं है, सिवाय इसके कि हम अपने बीते हुए अनुभव में प्रभु की शिक्षाओं को भूल जाएँ। हम यह संकेत कर रहे हैं कि आप इस अगुवाई को उसकी शिक्षा से पृथक नहीं कर सकते।

जेम्स व्हाइट और एलेन जी. व्हाइट की जीवन-रेखाएँ, 1888, पृष्ठ 186-187: “1843 में समय बीत जाने के द्वारा परमेश्वर ने अपनी प्रजा की परीक्षा ली और उसे परखा। भविष्यवाणी की अवधियों की गणना करने में जो

भूल—एक विलक्षण भूल—उन्होंने की थी, वह तुरंत ही उन विद्वान पुरुषों द्वारा भी नहीं पहचानी गई, जो मसीह के आगमन की बात जोहनेवालों के विचारों का विरोध करते थे। इन गहन विद्वानों ने घोषित किया कि समय की गणना में श्री मिलर सही थे, यद्यपि उस घटना के विषय में, जो उस अवधि का परिपूर्ण समापन करती, वे उनसे असहमत थे। परंतु वे, और परमेश्वर की प्रतीक्षारत प्रजा, समय के प्रश्न पर एक ही समान भूल में थे।”

हम पूर्ण विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने अपनी बुद्धि में यह अभिप्रेत किया कि उसके लोग ऐसी निराशा का अनुभव करें, जो हृदयों को प्रकट करने और सच्चे चरित्रों को विकसित करने के लिए अत्यन्त उपयुक्त थी—केवल उनके हृदयों को प्रकट करने के लिए ही नहीं, वरन् उनके चरित्रों को विकसित करने के लिए भी, उन्हें उस बिन्दु तक ले आते हुए जहाँ उस संकट में, जो मध्यरात्रि की पुकार पर आता है, यह प्रदर्शित हो जाता। जिन्होंने परमेश्वर के न्यायों के भय से, न कि इस कारण कि वे सत्य से प्रेम रखते थे और स्वर्ग के राज्य में उत्तराधिकार की अभिलाषा रखते थे, पहले स्वर्गदूत के सन्देश को ग्रहण किया था, वे अब अपने वास्तविक प्रकाश में प्रकट हुए। जो लोग ईमानदारी से यीशु के प्रकट होने की लालसा रखते थे और उससे प्रेम करते थे, उन निराश हुए लोगों का उपहास करने वालों में वे सबसे पहले थे। परमेश्वर की यह अत्यन्त खोजनेवाली परीक्षा उन लोगों के सच्चे चरित्रों को प्रकट कर गई, जो परीक्षा की घड़ी में अपने विश्वास का इन्कार करके उत्तरदायित्व और कलंक से बच निकलना चाहते थे।

जो निराश हुए थे, उन्हें अन्धकार में नहीं छोड़ा गया; क्योंकि गम्भीर प्रार्थनाओं के साथ भविष्यवाणीय कालों की खोज करने पर भूल का पता चला—वह एक विशिष्ट भूल—और विलम्ब के समय तक भविष्यवाणी की लेखनी के क्रम का अनुगमन किया गया। मसीह के आगमन की आनन्दमय प्रतीक्षा में दर्शन के प्रत्यक्ष विलम्ब को ध्यान में नहीं रखा गया था, और वह एक दुःखद तथा अप्रत्याशित आश्चर्य सिद्ध हुआ। तौभी, सत्य के निष्कपट विश्वासियों को विकसित और दृढ़ करने के लिए यही परीक्षा अत्यन्त आवश्यक थी। विलम्ब का समय अत्यन्त आवश्यक था। वह न केवल उन दो वर्गों को प्रकट करने और उनके चरित्रों के विकास का आरम्भ करने वाला था, जिनका प्रदर्शन मध्यरात्रि के पुकार के इतिहास से लेकर द्वार बन्द होने तक किया जाने वाला था, वरन् वह उन लोगों को सुदृढ़ करने के लिए भी आवश्यक था जो इस विवाद के परिणाम में सही पक्ष पर निकलेंगे। आप विलम्ब के समय को मध्यरात्रि के पुकार या द्वार बन्द होने से पृथक नहीं कर सकते।

जब आप मध्यरात्रि की पुकार का इन्कार करते हैं, तब आप उसी इतिहास का इन्कार कर रहे होते हैं। मध्यरात्रि की पुकार केवल एक्सेटर कैम्प मीटिंग में सैमुएल स्नो का संदेश मात्र नहीं है; वह ठहराव के समय का अनुभव है। प्रभु इसी ओर ले चला रहा था। भविष्य के विषय में हमें किसी बात से भय करने की आवश्यकता नहीं है, सिवाय इसके कि हम अपने भूतकालीन इतिहास में प्रभु के मार्गदर्शन को भूल जाएँ—ठहराव के समय और मध्यरात्रि की पुकार के इस इतिहास को, जहाँ वह मिलेराइट इतिहास में अनन्त सुसमाचार को उसके चरमोत्कर्ष तक पहुँचाता है, और उपासकों के दो वर्ग उत्पन्न करता है।

अर्ली राइटिंग्स, पृष्ठ 74: "मैंने देखा है कि 1843 का चार्ट प्रभु के हाथ द्वारा निर्देशित था, और उसमें कोई परिवर्तन नहीं किया जाना चाहिए; कि उसके अंक वैसे ही थे जैसे वह चाहता था; कि उसका हाथ उन अंकों में से कुछ की एक त्रुटि पर था और उसने उसे छिपा रखा था, ताकि कोई उसे देख न सके, जब तक कि उसका हाथ हटा न लिया गया।"

अधर्म का रहस्य और परीक्षा की प्रक्रिया

यदि हमारे पास समय होता, तो हम अधर्म के भेद पर चर्चा कर सकते थे। अधर्म के भेद की एक से अधिक सही परिभाषाएँ हो सकती हैं, परंतु यहाँ इसका आशय उस कार्य से है जिसमें शैतान उन पवित्र इतिहासों में, जहाँ प्रभु अपनी प्रजा की परीक्षा लेते हैं, बुराई को भलाई के साथ और सत्य को भ्रांति के साथ मिला देता है। पवित्रशास्त्र के उन पवित्र इतिहासों में, जहाँ प्रभु अपनी प्रजा को परीक्षात्मक प्रक्रिया में ले आते हैं, आप सदैव अधर्म का भेद देखेंगे—अर्थात् शैतान की वह सक्रियता, जिसमें वह सत्य को भ्रांति के साथ मिला देता है। जब लोग इस परीक्षा-बिंदु पर पहुँचते हैं, तब अधर्म के भेद ने विषयों को धुंधला कर दिया होता है।

जब नूह के परीक्षण का समय आया, तब बाइबल हमें बताती है कि उससे पहले शैतान का बीज परमेश्वर के बीज के साथ मिला दिया गया था। यही वह बात थी जिसके कारण नूह के समय में अधर्म के भेद की परिपूर्ति हुई, जिसे उत्पत्ति में इस प्रकार व्यक्त किया गया है कि परमेश्वर के पुत्रों ने मनुष्यों की पुत्रियों को अपनी पत्नियों के रूप में ले लिया—दोनों बीजों का मिश्रण, अधर्म का वह भेद जो नूह की परीक्षा से पहले आता है।

मूसा और लाल समुद्र की परीक्षा के प्रसंग में, पवित्रशास्त्र वर्णन करता है कि इस्राएल, जिसकी परीक्षा लाल समुद्र पर और सीनै पर होने वाली थी, वहाँ इतने लंबे समय तक रहने के कारण मिस्र की शिक्षाओं से भ्रष्ट हो गया था। यही अधर्म का भेद था—शैतानी शिक्षाओं के प्रभाव में आ जाना।

यहूदियों के समय में, यूनानी शिक्षाओं ने ही महासभा को उनकी परख की प्रक्रिया को अस्वीकार करने के लिए मार्ग तैयार किया।

मिलरवादी इतिहास में, प्रोटेस्टेंट कलीसियाओं के भीतर के मिलरवादी अभी-अभी पापसी के प्रभाव के 1260 वर्षों से बाहर आए थे, जिसने शुद्ध बीज को अशुद्ध बीज के साथ भ्रष्ट कर दिया था, और इस प्रकार अधर्म का एक भेद उत्पन्न किया था, जो मिलरवादी इतिहास की परीक्षा से पूर्व था।

यह अधर्म का वह भेद है जो सदा उपस्थित रहता है।

यदि आप अध्ययन करें कि अधर्म का भेद कैसे कार्य करता है, तो *Patriarchs and Prophets* के प्रथम अध्याय में जाएँ। बहन व्हाइट हमें बताती हैं कि शैतान ने स्वर्ग में अधर्म के उस भेद को कैसे पूरा किया। स्वर्ग में यह परीक्षा होने वाली थी कि कौन-से स्वर्गदूत बने रहेंगे और कौन हटा दिए जाएँगे, और उस परीक्षा-प्रक्रिया से पूर्व ही शैतान वहीं स्वर्ग में अधर्म के भेद को पूरा कर रहा था।

शैतान ने यह कार्य संदेह का संकेत देकर, अपने वचन को परमेश्वर के वचन से ऊपर रखकर, और उससे भी बढ़कर, दूसरों को अपनी मिथ्या शिक्षाओं को व्यक्त करने के लिए प्रेरित करके किया—यह एक दुष्टतापूर्ण गतिविधि थी। वह तुम्हारे मन में संदेह उत्पन्न करता, और फिर तुम बाहर जाकर उस संदेह को किसी समूह के सामने व्यक्त करते। यदि कोई उस संदेह के विषय में शिकायत करता, तो वह उसके विषय में उससे नहीं, बल्कि तुमसे शिकायत करता।

हाल ही में, स्पोकेन, वॉशिंगटन के एक पादरी ने *Early Writings*, पृष्ठ 74 पर टिप्पणी करते हुए कहा, “मैं एलेन व्हाइट के समय और युग के शब्दकोश, वेबस्टर डिक्शनरी, में गया, और figures का अर्थ अंकगणित से संबंधित कोई बात नहीं होता।” जिन अधिकांश लोगों ने यह सुना, वे इसकी जाँच नहीं करते और उस पर विश्वास कर लेते। कम-से-कम, वह पादरी इस विषय में संदेह बो रहा था कि इस अनुच्छेद में figures किसका प्रतिनिधित्व करते हैं; वास्तव में, वह झूठ बोल रहा था। वेबस्टर की 1828 की डिक्शनरी कहती है: FIGURE, n. अंकगणित में, ऐसा चिह्न जो किसी संख्या को प्रकट करता है, जैसे 2, 7, 9.

वह संदेह प्रकट कर रहा था, और उस कार्य को कर रहा था जिसे अधर्म का भेद कहा गया है। वह ऐडवेंटिस्टों के लिए—यदि वे देखने को इच्छुक हों—यह प्रकट कर रहा था कि पृथ्वी के इतिहास के इस समय में, तुम्हें सत्य को अपने लिए स्वयं समझना चाहिए और मनुष्यों की न सुननी चाहिए; क्योंकि, “. . . अधर्म का भेद तो अब भी कार्य कर रहा है:”

अर्ली राइटिंग्स, पृष्ठ 74: “. . . कि वे अंक वैसे ही थे जैसा वह चाहता था, कि उसका हाथ उन अंकों में से कुछ की एक त्रुटि पर था और उसे छिपाए हुए था, ताकि जब तक उसका हाथ हटाया न गया, तब तक कोई उसे देख न सके।”

यह भटकाने वाली बात है, और धर्मशास्त्री प्रायः ऐसा करते हैं। यदि आप यह समझना चाहते हैं कि बाइबल या भविष्यवाणी की आत्मा में किसी शब्द का क्या अर्थ है, तो आप सबसे पहले शब्दकोशों की ओर नहीं देखते; आप भविष्यद्वक्ता की ओर देखते हैं। उदाहरण के लिए, दानिय्येल 8:11 में दानिय्येल हिब्रानी शब्द rum का प्रयोग करता

है, जिसका अनुवाद “हटा लिया गया” किया गया है। लोग सोचते हैं कि इसका अर्थ “हटा देना” है, परन्तु दानिय्येल rum का पाँच और बार प्रयोग करता है, और वहाँ इसका अर्थ कभी “हटा लेना” नहीं होता—उसका अर्थ होता है “ऊँचा उठाना और महिमामन्वित करना।” इसलिए, यह मानना कि दानिय्येल 8:11 में rum का अर्थ “हटा लेना” है, परंपरा का अनुसरण करना है, न कि उस प्रकार का जैसा दानिय्येल ने उस शब्द का प्रयोग किया।

इसी प्रकार, एलेन व्हाइट के संबंध में: यदि आप यह दावा करना चाहते हैं कि Early Writings, 74 में “figures” का अर्थ कलात्मक आकृतियाँ या ग्राफ़िक्स है, तो आप कह सकते हैं, “एलेन व्हाइट के समय के शब्दकोश में यह नहीं कहा गया है कि figures का अर्थ arithmetic होता है,” यह भरोसा रखते हुए कि अधिकांश लोग इसकी जाँच नहीं करेंगे। परन्तु यदि वे जाँच करते, तो वे पाते कि figures का अर्थ arithmetic होता है।

परन्तु सबसे पहले आपको स्वयं एलेन व्हाइट के पास जाना चाहिए: “आँकड़ों” से उनका क्या अभिप्राय है? *Early Writings*, पृष्ठ 74 में वह कहती हैं, “उसका हाथ कुछ आँकड़ों की त्रुटि पर था और उसे ढाँपे हुए था,” और पृष्ठ 236 में वह कहती हैं, “उसका हाथ भविष्यद्वाणी-संबंधी अवधियों की गणना में हुई एक त्रुटि को ढाँपे हुए था।” भविष्यद्वाक्त्री स्पष्ट करती हैं कि उनकी पारिभाषिक संज्ञा “आँकड़े” भविष्यद्वाणी की अवधियों का द्योतक है—अर्थात् गणितीय गणना, न कि चित्रकारी।

तो फिर, प्रभु ने अपने हाथ से किस बात को ढाँप दिया? उन्होंने भविष्यद्वाणी की अवधियों की गणना—अर्थात् संख्याओं—में हुई एक त्रुटि को अपने हाथ से ढाँप दिया।

2520 के प्रति एलेन व्हाइट का अनुमोदन

यही मूल निष्कर्ष है। बहुत-से लोग वही संदेश प्रस्तुत कर रहे हैं जो हम कर रहे हैं, और मैं उनका समर्थन करता हूँ। परंतु जब बात 2520 की आती है, और इस प्रश्न की कि क्या एलेन व्हाइट ने इसे एक मान्य भविष्यद्वाणी माना था, तो यही तर्क है—यही प्रमाण है, और यहीं से आपको आरंभ करना चाहिए। अन्य सभी तर्क मान्य और सत्य हैं, परंतु आरंभ-बिंदु यही है।

अर्ली राइटिंग्स, पृष्ठ 74 में, जहाँ यह कहा गया है कि प्रभु ने अंकों में हुई कुछ त्रुटियों पर अपना हाथ रख दिया, वह उसी पुस्तक के पृष्ठ 236 पर इसका अर्थ स्पष्ट करती है: “मैंने परमेश्वर की प्रजा को आनन्दित अपेक्षा में, अपने प्रभु की बात जोहते हुए देखा। परन्तु परमेश्वर ने उन्हें परखने का अभिप्राय रखा था।” वह विलंब के समय [22 मार्च, 1844], अर्थात् पहली निराशा, की बात कर रही है।

वह 22 अक्टूबर, 1844 की निराशा की बात नहीं कर रही हैं, क्योंकि वहाँ भी उनकी परीक्षा होने वाली है; बल्कि यहाँ वह 22 मार्च, 1844, अर्थात् विलम्ब के समय, की बात कर रही हैं: “परमेश्वर ने उन्हें परखने का उद्देश्य रखा था।” “उसका हाथ भविष्यद्वाणी की अवधियों की गणना में हुई एक भूल पर ढका रहा।” वह विलम्ब के समय के द्वारा उनकी परीक्षा कैसे करने वाला था? इस प्रकार कि उसने भविष्यद्वाणी की अवधियों के विषय में उनकी समझ पर अपना हाथ रखे रखा। भविष्य के विषय में तुम्हें किसी बात का भय करने की आवश्यकता नहीं है, सिवाय इसके कि हम यह भूल जाएँ कि प्रभु ने अतीत में, मिलरवादियों के इतिहास में और अपनी शिक्षाओं में, हमारा कैसे मार्गदर्शन किया है।

ये भविष्यद्वाणी-संबंधी अवधियाँ वही शिक्षाएँ हैं जिन्होंने विलंब का समय उत्पन्न किया। “उसके हाथ ने भविष्यद्वाणी-संबंधी अवधियों की गणना में एक भूल को ढाँक दिया। जो अपने प्रभु की प्रतीक्षा कर रहे थे, उन्होंने इस भूल को नहीं पहचाना,”—एकवचन भूल—“और समय का विरोध करने वाले सबसे विद्वान पुरुष भी उसे देख न सके। परमेश्वर ने ठहराया था कि उसकी प्रजा निराशा का सामना करे। समय बीत गया, और जिन्होंने अपने उद्धारकर्ता के लिए आनंदमय आशा के साथ प्रतीक्षा की थी, वे उदास और निरुत्साहित हो गए; जबकि जिन्होंने यीशु के प्रकट होने से प्रेम नहीं रखा था, पर भय के कारण संदेश को ग्रहण किया था, वे इस बात से प्रसन्न हुए कि वह

अपेक्षित समय पर नहीं आया। उनके अंगीकार ने न तो हृदय को प्रभावित किया था और न जीवन को शुद्ध किया था। समय का बीत जाना ऐसे हृदयों को प्रकट करने के लिए भली-भाँति उपयुक्त था। वही सबसे पहले मुड़े और उन शोकाकुल, निराश लोगों का उपहास करने लगे, जो वास्तव में अपने उद्धारकर्ता के प्रकट होने से प्रेम रखते थे। मैंने परीक्षा की घड़ी में पीछे हट जाने और लौट जाने वालों को प्रकट करने के लिए अपनी प्रजा की जाँच करने और उन्हें परखने वाली कसौटी देने में परमेश्वर की बुद्धि देखी।

यीशु और समस्त स्वर्गीय सेना ने उन लोगों पर सहानुभूति और प्रेम से दृष्टि डाली, जिन्होंने मधुर अपेक्षा के साथ उसे देखने की लालसा की थी जिसे उनकी आत्माएँ प्रेम करती थीं। स्वर्गदूत उनके चारों ओर मंडरा रहे थे, ताकि उनकी परीक्षा की घड़ी में उन्हें संभाल सकें। जिन्होंने स्वर्गीय संदेश को ग्रहण करना अपेक्षित किया था, वे अंधकार में छोड़ दिए गए, और परमेश्वर का क्रोध उन पर भड़क उठा, क्योंकि उन्होंने उस ज्योति को ग्रहण करना नहीं चाहा था, जिसे उसने स्वर्ग से उनके पास भेजा था। वे विश्वासयोग्य, निराश हुए जन, जो यह नहीं समझ सके कि उनका प्रभु क्यों नहीं आया, अंधकार में नहीं छोड़े गए। उन्हें फिर उनकी बाइबलों की ओर ले जाया गया, ताकि वे भविष्यवाणी के कालखंडों की खोज करें। प्रभु का हाथ अंकों से हटा लिया गया, और भूल—एकवचन—समझा दी गई।

यहाँ वह 1843 चार्ट के अंकों में हुई भूल की व्याख्या करती है, और वह पहले ही स्पष्ट कर चुकी है कि वे अंक भविष्यवाणी की अवधियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। “उन्होंने देखा कि भविष्यवाणी की अवधियाँ 1844 तक पहुँचती थीं, और वही प्रमाण, जिसे उन्होंने यह दिखाने के लिए प्रस्तुत किया था कि भविष्यवाणी की अवधियाँ 1843 में समाप्त होती हैं, यह सिद्ध करता था कि वे 1844 में समाप्त होंगी।” चर्चा समाप्त! एलेन व्हाइट 2520 पर अपनी अनुमोदन-मोहर लगा देती हैं।

1843 के चार्ट पर केवल तीन भविष्यवाणी-संबंधी अवधियाँ थीं, जिन्हें वे 1843 में समाप्त हुई समझते थे: 1335, 2520, और 2300। इन अंकों में से कुछ की त्रुटि पर—इस चार्ट की भविष्यवाणी-संबंधी अवधियों पर—परमेश्वर ने अपना हाथ तब तक रखा, जब तक कि उसका हाथ हटा नहीं लिया गया। जब उसने अपना हाथ हटा लिया, तब विश्वासयोग्य प्रतीक्षा करनेवालों को भविष्यवाणी-संबंधी अवधियों का फिर से अध्ययन करने के लिए अगुवाई दी गई, और उन्होंने पाया कि वही प्रमाण, जिसने उन्हें यह प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित किया था कि भविष्यवाणी-संबंधी अवधियाँ 1843 में समाप्त हुईं, तब यह सिद्ध करनेवाला पहचाना गया कि उनमें से दो 1844 में समाप्त हुईं।

1335 की अवधि ईस्वी सन् 508 में आरम्भ होती है और 1843 में समाप्त होती है। 2520 की अवधि 677 ईसा-पूर्व में आरम्भ होती है और वर्ष की पूर्णता से प्रभावित होती है। अग्रदूतों ने विचार किया कि यह 1843 में समाप्त होती है, परन्तु बाद में उन्होंने समझा कि वही प्रमाण, जिसने उन्हें 1843 की भविष्यवाणी करने के लिए प्रेरित किया था, यह सिद्ध करता है कि 2520 की भविष्यवाणी 1844 में समाप्त हुई। 2300 की भविष्यवाणी 457 ईसा-पूर्व में आरम्भ होती है, और उन्होंने समझा था कि यह 1843 में समाप्त होती है, परन्तु निराशा के बाद, भविष्यवाणी की अवधियों के अपने अध्ययन के द्वारा, उन्होंने यह जान लिया कि यह 1844 में समाप्त हुई।

केवल तीन ही भविष्यवाणियाँ थीं जिनके विषय में उन्होंने यह भविष्यवाणी की थी कि वे 1843 में समाप्त होंगी, और उनमें से एक वास्तव में समाप्त होती है: 1335। यह भविष्यवाणी वह नहीं है जिस पर प्रभु ने अपना हाथ रखा था। यह टारिंग टाइम से लेकर मिडनाइट क्राय के माध्यम से 22 अक्टूबर, 1844 तक मिलराइटों के इतिहास की पहचान करती है।

कल की प्रस्तुति में हमने एलेन व्हाइट के इस उद्धरण पर समाप्त किया था: “धन्य हैं वे नेत्र जिन्होंने उन बातों को देखा जो 1843 और 1844 में देखी गई थीं।” यह है, “धन्य है वह जो 1843 तक पहुँचता है।” अगले अनुच्छेद में वह कहती हैं, “संदेश दिया गया था। और संदेश को दोहराने में कोई विलंब नहीं होना चाहिए, क्योंकि समय के चिन्ह पूरे हो रहे हैं; समापन का कार्य किया जाना चाहिए। थोड़े समय में एक महान कार्य किया जाएगा। परमेश्वर की नियुक्ति से शीघ्र ही एक संदेश दिया जाएगा जो प्रबल होकर एक ऊँचे शब्दघोष में परिणत होगा। तब दानियेल अपने भाग में खड़ा होगा, अपनी गवाही देने के लिए।” Manuscript Releases, volume 21, 437.

दानिय्येल 12 का पद 13 है—दानिय्येल का अपने भाग में खड़ा होना। “धन्य हैं वे आँखें जिन्होंने 1843 और 1844 में देखी गई बातों को देखा” पद 12 है। एलेन व्हाइट, दानिय्येल 12:12-13 पर दैवीय टीका देते हुए कहती हैं कि ये पद किसी समय-भविष्यवाणी के विषय में नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे अनुभव के विषय में हैं जिसमें 1843 और 1844 सम्मिलित हैं, और जो 1843 के एक भ्रम के कारण उत्पन्न हुआ, जो एक विलम्ब के समय को उत्पन्न करता है। जब विलम्ब का समय आता है, तब “धन्य है वह जो प्रतीक्षा करता है।” यद्यपि दर्शन विलम्ब करे, तौभी उसकी बात जोह। धन्य है वह जो विलम्ब के समय से लेकर द्वार बन्द होने तक विश्वासयोग्यता के साथ प्रतीक्षा करता है। 1843 और 1844 में विश्वासयोग्य जन जो देखता है, वह एक ऐसा आशीष है जो उसे परमपवित्र स्थान में ले जाता है।

1335 की भविष्यवाणी 1843 में समाप्त हुई, जो मध्यरात्रि के पुकार के आगमन को चिह्नित करती है। 2520 और 2300 की भविष्यसूचक अवधियाँ 1844 में समाप्त होती हैं। एलेन व्हाइट कहती हैं कि वही प्रमाण, जिसने उन्हें यह घोषणा करने के लिए प्रेरित किया था कि 2520, 2300, और 1335 का अंत 1843 में हुआ, तब यह सिद्ध करने के लिए मान्य ठहराया गया कि वे 1844 में समाप्त होंगी।

परमेश्वर के वचन से निकला प्रकाश उनकी स्थिति पर चमका, और उन्होंने एक ठहरने का समय पाया—“यद्यपि उस [दर्शन] में विलम्ब हो, तौभी उसकी बात जोहते रहो।” मसीह के शीघ्र आगमन के प्रति अपने प्रेम में उन्होंने दर्शन के उस विलम्ब को अनदेखा कर दिया था, जिसकी गणना सच्चे प्रतीक्षा करने वालों को प्रकट करने के लिए की गई थी। फिर से उनके पास समय का एक बिन्दु था। तौभी मैंने देखा कि उनमें से बहुत-से अपने गहरे निराशा-बोध से ऊपर उठकर उस स्तर के उत्साह और शक्ति को प्राप्त न कर सके, जिसने 1843 में उनके विश्वास को चिह्नित किया था।

शैतान और उसके स्वर्गदूत उन पर विजयी हुए, और जो लोग उस संदेश को ग्रहण नहीं करना चाहते थे, उन्होंने अपने आप को इस बात पर बधाई दी कि जिसे वे भ्रम कहते थे, उसे ग्रहण न करने में उनका दूरदर्शी निर्णय और बुद्धिमत्ता प्रकट हुई है। वे यह नहीं समझ पाए कि वे अपने ही विरुद्ध परमेश्वर की सम्मति को अस्वीकार कर रहे थे, और शैतान तथा उसके स्वर्गदूतों के साथ मिलकर परमेश्वर की प्रजा को उलझन में डालने का काम कर रहे थे, जो स्वर्ग-प्रेषित संदेश को अपने जीवन में प्रकट कर रही थी।

इस इतिहास में उपासकों के दो वर्ग हैं। अविश्वासी वर्ग प्रतीक्षा करने वालों का उपहास करता है, परन्तु प्रतीक्षा करने वालों को भविष्यवाणी की काल-अवधियों की ओर पुनः ले जाया जाता है, और वे यह समझने लगते हैं कि वही प्रमाण, जिसने उन्हें 1843 में 2520 और 2300 की समाप्ति की पहचान करने के लिए प्रेरित किया था, यह सिद्ध करने वाला था कि वे 1844 में समाप्त हुए।

यद्यपि प्रतीक्षा करनेवालों ने इसे पहचान लिया था, तौभी वे प्रभु के लिए उतने प्रज्वलित नहीं थे जितने पहली निराशा से पहले थे। मध्यरात्रि की पुकार के संदेश पर वे फिर से प्रज्वलित किए जाएँगे। मध्यरात्रि की पुकार से पहले ही प्रतीक्षा करनेवालों ने 1844 को, अर्थात् भविष्यवाणियों के अंत को, समझ लिया था।

मध्यरात्रि की पुकार के संदेश ने प्रतीक्षा करनेवालों को 22 अक्टूबर, 1844 की पहचान करने की अनुमति दी। उस जानकारी के साथ, यह केवल 1844 में किसी समय नहीं था; यह ठीक इसी दिन था, और उसी ने उस संदेश को सामर्थ्य प्रदान की।

क्या आप इस प्रक्रिया को देखते हैं? वे शिक्षाएँ जो इस अनुभव को उत्पन्न करती हैं, तीन भविष्यवाणियाँ हैं: 1335, 2300, और 2520।

यह समझ लेने के बाद वे यह घोषणा करने लगे, "बाबुल में से निकल आओ।" यही दूसरे स्वर्गदूत का संदेश है।

आइए हम स्पष्ट रहें: ठहरने के समय पर क्या समाप्त होता है? 1843 के चार्ट का उपयोग। उन्होंने इस चार्ट को एक ओर रख दिया, क्योंकि अब वे समझ चुके थे कि प्रभु 1844 में आने वाले थे, जबकि चार्ट में 1843 लिखा था। इसलिए, उन्होंने दूसरे स्वर्गदूत के संदेश के इतिहास के लिए उस चार्ट को एक ओर रख दिया।

दूसरे स्वर्गदूत के इतिहास में उनका संदेश क्या बन जाता है? अंतिम अनुच्छेद इसकी व्याख्या करता है।

इस संदेश के विश्वासी कलीसियाओं में सताए गए। कुछ समय तक जो लोग इस संदेश को ग्रहण नहीं करना चाहते थे, वे भयवश अपने हृदय की भावनाओं को व्यवहार में प्रकट करने से रोके रहे; परन्तु समय बीतने पर उनकी सच्ची भावनाएँ प्रकट हो गईं। वे उस गवाही को मौन कर देना चाहते थे, जिसे प्रतीक्षा करनेवाले अपने को देने के लिए बाध्य अनुभव करते थे—कि भविष्यद्वाणी के कालखंड 1844 तक विस्तृत थे।

कौन-सी भविष्यद्वाणी-संबंधी अवधियाँ? 2520, 2300, और 1335। इसी इतिहास में यही उनका संदेश है। अब वे कह रहे हैं, “हम समझ गए! ये भविष्यद्वाणियाँ 1844 तक विस्तृत होती हैं।” मध्यरात्रि के पुकार के इतिहास में उनका संदेश 2520 और 2300 वर्षों की भविष्यद्वाणियाँ हैं।

कुछ समय तक, जिन्होंने उस संदेश को ग्रहण नहीं किया था, वे अपने हृदय की भावनाओं के अनुसार कार्य करने से भयवश रोके हुए थे; परन्तु समय के बीत जाने ने उनकी वास्तविक मनोभावनाओं को प्रकट कर दिया। वे उस साक्ष्य को मौन कर देना चाहते थे, जिसे प्रतीक्षा करनेवाले लोग यह अनुभव करते हुए देने के लिए बाध्य थे कि भविष्यद्वाणी की समय-अवधियाँ 1844 तक विस्तृत थीं। विश्वासियों ने अपनी भूल—एक विलक्षण भूल—को स्पष्टता के साथ समझाया, और वे कारण भी प्रस्तुत किए जिनके आधार पर वे 1844 में अपने प्रभु की प्रतीक्षा कर रहे थे। उनके विरोधी प्रस्तुत किए गए उन प्रभावशाली कारणों के विरुद्ध कोई तर्क नहीं ला सके। तौभी कलीसियाओं का क्रोध भड़क उठा; उन्होंने निश्चय कर लिया कि वे प्रमाण को न सुनेंगे, और उस साक्ष्य को कलीसियाओं से बाहर ही रखेंगे, ताकि अन्य लोग उसे सुन न सकें।

जब आप 2520 को 2300 दिनों के संबंध में प्रस्तुत करते हैं, तो मिलेराइट इतिहास में आपको कलीसियाओं से बाहर कर दिया जाता है, और उस संदेश को चुप कराने का प्रयास किया जाता है।

जिन्होंने वह ज्योति, जो परमेश्वर ने उन्हें दी थी, दूसरों से रोक रखने का साहस नहीं किया, उन्हें कलीसियाओं से बाहर कर दिया गया; परन्तु यीशु उनके साथ था, और वे उसके मुखमण्डल के प्रकाश में आनन्दित थे। वे दूसरे स्वर्गदूत का संदेश ग्रहण करने के लिए तैयार किए गए थे।” *Early Writings*, 235–237.

2520 के अध्ययन में प्रवेश किए बिना, हम यह दिखाने का प्रयास कर रहे हैं कि एलेन व्हाइट 2520 पर अपनी स्वीकृति की मुहर लगाती हैं। यदि आप इसे नहीं देख सकते, तो आपको प्रार्थना करनी चाहिए कि यीशु आपकी आँखों से परदा हटा दें। एलेन व्हाइट ने कहा कि वही प्रमाण, जिसने उन्हें 1843 की भविष्यद्वाणी करने के लिए प्रेरित किया था, बाद में यह सिद्ध करने हेतु देखा गया कि ये भविष्यद्वाणी-संबंधी अवधियाँ 1844 में समाप्त हुईं। वह सदा भविष्यद्वाणी-संबंधी अवधियों, अथवा संख्याओं, का उल्लेख बहुवचन में करती हैं। 1843 के चार्ट पर केवल तीन भविष्यद्वाणी-संबंधी अवधियाँ हैं जो 1843 में समाप्त हुईं।

जो 1843 में समाप्त होती है, अर्थात् 1335, उसके लिए यह आवश्यक है कि वह “figures” और “prophetic periods” कहने में व्याकरणिक शुद्धता के लिए कम-से-कम दो भविष्यद्वाणी-संबंधी अवधियों का अभिप्राय रखे। यदि तीन हैं और आप उनमें से एक को हटा दें, तब जिन दो का वह समर्थन करती है, वे 2520 और 2300 ही हैं, चाहे कोई और कुछ भी कहे।

इस इतिहास में, जिसमें 22 अक्टूबर 1844 को एडवेंटिस्टों की महान निराशा भी सम्मिलित है, प्रभु एक ऐसा अनुभव उत्पन्न कर रहा था जिसमें वे कलीसियाओं से बाहर कर दिए जा रहे थे, ताकि वे मनुष्यों के प्रभाव पर नहीं, वरन् परमेश्वर के वचन पर दृढ़ होकर खड़े हों। उन्हें उस अनुभव की आवश्यकता थी, ताकि वे यीशु मसीह के साथ परमपवित्र स्थान में प्रवेश करने के लिए विश्वास धारण कर सकें। वह उन्हें सिद्ध कर रहा था, ताकि अनन्त सुसमाचार को उसके निष्कर्ष तक पहुंचाया जा सके।

अग्रदूतों की गवाही: जेम्स व्हाइट और उरियाह स्मिथ

इसके बाद हमारे पास दो अग्रदूत हैं, जेम्स व्हाइट और उरियाह स्मिथ। ये वे प्रमुख व्यक्ति हैं जिनका उल्लेख आधुनिक धर्मशास्त्री यह दावा करने के लिए करते हैं कि जेम्स व्हाइट ने 1863 में 2520 को अस्वीकार कर दिया था, और उरियाह स्मिथ ने 1870 और 1880 के दशकों में अपने लेखनों में उसे अस्वीकार किया था।

हम 1844 में और उसके थोड़े ही समय बाद लौट रहे हैं, ताकि देखें कि जेम्स व्हाइट और उरियाह स्मिथ उसी इतिहास का वर्णन किस प्रकार करते हैं, जिसका वर्णन एलेन व्हाइट ने अभी-अभी किया है। वह भविष्यवाणी-संबंधी अवधियों, प्रभु के अपना हाथ हटा लेने, और भूल को देख लेने की बात करती हैं, और ये दोनों अग्रदूत भी ऐसा ही करते हैं।

एलेन व्हाइट “2520” या “सात समय” नहीं कहतीं, परन्तु उरियाह स्मिथ और जेम्स व्हाइट ऐसा कहते हैं। वे यह स्पष्ट करते हैं कि इस इतिहास में मान्य भविष्यवाणी-समयावधियाँ 2520 और 2300 थीं।

जेम्स व्हाइट, रिव्यू एंड हेराल्ड, खंड 1, 9 जुलाई, 1851: “एक आपत्तिकर्ता कहता है, ‘मैं यह विश्वास नहीं करता कि मध्यरात्रि का पुकारा अब तक दिया गया है।’ हम भी यह विश्वास नहीं करते कि मध्यरात्रि का पुकारा हमारे द्वारा सुना गया है, या कि वह कभी सुना जाएगा। मत्ती 25:6 का यह पुकारा, ‘देखो, दूल्हा आता है,’ एक पूर्वी विवाह के इतिहास में है। परन्तु यह नहीं नकारा जाना चाहिए कि 1844 की शरद ऋतु में एक पुकारा दिया गया था, और सम्पूर्ण एडवेंट समुदाय द्वारा पूर्णतः ग्रहण किया गया था, जो दृष्टान्त के मध्यरात्रि के पुकारे से अच्छी रीति से तुलना रखता है—विशेषकर उनके द्वारा, जिनका उसमें अनुभव था।”

जेम्स व्हाइट उस इतिहास का विवेचन कर रहे हैं जिसमें लोग मध्यरात्रि के पुकार को अस्वीकार कर रहे हैं और मार्ग से गिरते जा रहे हैं। वे इसी के प्रत्युत्तर में बोल रहे हैं और इस इतिहास पर चर्चा करेंगे।

“वह ठीक समय पर आया। दृष्टान्त की पुकार विलम्ब, तथा ऊँघने और सो जाने के तुरन्त पश्चात् हुई। यह हमारे विलम्ब के बाद, निराश हो जाने पर, और हमारी निद्रित अवस्था में हमारे कानों तक पहुँची। उस पुकार ने दसों कुँवारियों को जगा दिया, और उन्हें अपने दीपक ठीक करने के लिए प्रेरित किया। यह, आत्मा की सामर्थ्य के साथ, आगमन-जन को जागृत कर गया, और उन्हें ऐसे रीति से बाइबल की खोज करने के लिए ले गया जैसा पहले कभी नहीं किया था, तथा अपने आप को और अपनी सांसारिक सम्पत्ति को पूर्णतः प्रभु के लिए समर्पित करने के लिए प्रेरित किया। जिन्होंने यह पुकार दी कि प्रभु सातवें महीने, 1844 में आएँगे, उन्होंने स्पष्ट रूप से देखा कि भविष्यवाणी की अवधियाँ उसी समय तक पहुँचती थीं; इसलिए, अवधियों से प्रस्तुत किया गया जो प्रमाण यह सिद्ध करने के लिए दिया गया था कि आगमन 1843 में होगा, वही यह सिद्ध करता था कि वह 1844 में होगा। तब हमने गणना करने की उस रीति में एक त्रुटि देखी, जिसने 2300 दिनों का अंत 1843 में ठहराया था। जिन्होंने आगमन के विरुद्ध लिखा था, उनमें से किसी ने भी उसे नहीं देखा। परमप्रबंध का हाथ उस भूल पर तब तक आवरण डाले रहा, जब तक कि उसे देखे जाने का समय न आ गया। त्रुटि यह थी कि 2300 में से पूरे 457 वर्ष घटा दिए गए, जिससे 1843 शेष रह गया, परन्तु 457 ईसा-पूर्व के उस वर्ष के उस अंश का कोई लेखा नहीं किया गया था जो उस समय बीत चुका था, जब वह आज्ञा निकली थी, जिससे 70 सप्ताहों की गणना की जाती है।”

“हमारे मन उस समय-बिंदु की ओर निर्देशित किए गए, [1843,] इस तथ्य के कारण कि अनेक भविष्यवाणी-कालों की गणना उन वर्षों से आरंभ करने पर, जिन्हें श्रेष्ठतम कालक्रम-निर्धारक उन घटनाओं की पूर्ति का वर्ष मानते हैं जो उनके आरंभ को चिह्नित करने वाली थीं, वे सब उसी वर्ष समाप्त होते हुए प्रतीत हुए।”

अब वह हमें उन भविष्यवाणी-संबंधी कालखंडों के विषय में बताता है, जिनके विषय में उनका विचार था कि वे 1843 में समाप्त होते हैं।

“यह, तथापि, केवल प्रत्यक्षतः ऐसा था।” केवल प्रत्यक्षतः ऐसा कि वे 1843 में समाप्त हुईं। वे पाएँगे कि वे 1844 में समाप्त हुईं।

“हम ‘सात कालों,’ अथवा 2520 वर्षों, की गणना मनश्शे की बंधुआई से करते हैं, जिसे कालगणनाकारों ने बड़े सर्वसम्मति से ईसा-पूर्व 677 में ठहराया है।” ये वही भविष्यद्वाणी संबंधी अवधियाँ थीं जिन पर वे विचार कर रहे थे। “इस अवधि के आरम्भ के लिए हमने यही एकमात्र तिथि मानी है जिससे हमने कभी गणना की है; और 2520 वर्षों में से ईसा-पूर्व 677 घटाने पर ईस्वी 1843 शेष रहता था। तथापि, हमने यह नहीं देखा कि, जैसे 2520 वर्षों को पूरा करने के लिए ईसा-पूर्व के पूरे 677 वर्ष और ईस्वी के पूरे 1843 वर्ष आवश्यक होते, वैसे ही यह भी हमें इस अवधि को ईस्वी 1844 के भीतर उतनी दूर तक बढ़ाने के लिए बाध्य करता, जितनी दूर इसका आरम्भ ईसा-पूर्व 677 के प्रारम्भ के बाद हुआ हो सकता था।”

वे भविष्यवाणी-संबंधी कालखंड, जिनके विषय में कहा गया कि “Providence के हाथ ने उसकी भूल पर अपना हाथ रखे रखा,” 2520 को सम्मिलित करते थे।

उरियाह स्मिथ: “जब समय AD1843 से आगे बढ़ गया, तब बहुतों ने अपने अपेक्षित उद्धार के वर्ष के विषय में हुई अपनी निराशा के कारणों की खोजबीन आरम्भ की। तब यह देखा गया कि यदि उन सभी भविष्यद्वाणी-संबंधी अवधियों का आरम्भ BC के उन्हीं वर्षों में माना जाए, जिनमें हम सदा से उनका आरम्भ ठहराते आए थे, तो वे, हमारी कालगणना और उनके आरम्भ की तिथि को सही मान लेने पर भी, क्रमशः 1844 वर्ष के भीतर किसी समय तक पूर्ण नहीं होतीं। इस प्रकार, सात काल, अर्थात् 2520 वर्ष, जिनका आरम्भ BC677 में हुआ—महान जुबिली, अर्थात् 2450 वर्ष [न तो 1843 के चार्ट पर और न ही 1850 के चार्ट पर प्रदर्शित।], जिसका आरम्भ BC607 में हुआ—और दानियेल के 2300 वर्ष, जिनका आरम्भ BC457 में हुआ—इनमें से प्रत्येक उस वर्ष के किसी भाग के बीत जाने के बाद आरम्भ हुआ था, जिससे उन भविष्यद्वाणी-संबंधी अवधियों की क्रमशः गणना की गई; अर्थात् वे विविध घटनाएँ, जिन्होंने उनके आरम्भ को चिह्नित किया, उन BC वर्षों के प्रारम्भ के बाद घटी थीं। अतः यह आवश्यक था कि वे अवधियाँ AD1844 में उतनी दूर तक बढ़ें, जितनी देर से वे उन BC वर्षों के आरम्भ के पश्चात् शुरू हुई थीं, जिनसे उनकी पृथक-पृथक गणना की जाती है, ताकि या तो प्रत्येक में वर्षों की संख्या पूरी हो, अथवा हमारी कालगणना की शुद्धता की परीक्षा हो सके। परन्तु इस बात का कोई सूत्र उपलब्ध न था कि उन-उन BC वर्षों में वे विविध अवधियाँ किस समय आरम्भ हुई थीं; और परिणामस्वरूप, उनके समाप्ति-वर्ष के भीतर उनके अंत का समय ठीक-ठीक निर्धारित नहीं किया जा सकता था।”

उरियाह स्मिथ और जेम्स व्हाइट, दोनों यह साक्ष्य देते हैं कि वे भविष्यद्वाणी संबंधी कालखंड, जिन्हें 1844 में समाप्त होने वाला माना गया था, 2520 और 2300 वर्ष थे; और वे वही अभिव्यक्तियाँ प्रयोग करते हैं जो एलेन व्हाइट ने Early Writings, पृष्ठ 236 और आगे में की हैं।

सत्य की शृंखला: विलियम मिलर के आरंभिक बिंदु “ऐसे लोग भी हैं जो ईमानदारी से मानते हैं कि ‘बाइबल, और केवल बाइबल,’ सब सिद्धांतों की मानक है; फिर भी वे यह मानते हैं कि भविष्यद्वाणी के कालखंडों में दिनों के प्रतीक के रूप में वर्षों के प्रयोग की परंपरा हमें मूर्तिपूजक राष्ट्रों से विरासत में मिली है—ऐसी राष्ट्रों से जो, जैसा वे कहते हैं, परमेश्वर ने अपनी प्रजा को उनसे सब बातें उधार लेने की अनुमति नहीं दी, बल्कि उनके कुछ भयानक घृणित कामों के कारण उन्हें देश के स्वामी होने से वंचित कर दिया, और इस प्रकार उन्हें उनकी नकल करने से मना किया। इस बहाने के अंतर्गत, एक समय, समयों और आधे समय को वे तीन वर्ष और छह महीने; बयालीस महीनों को भी तीन वर्ष और छह महीने; और 1260 दिनों को भी तीन वर्ष और छह महीने ही समझते हैं; और दानियेल की सत्तर सप्ताहों को 490 दिन या एक वर्ष, चार महीने, और दस दिन ही मानते हैं; और 2300 दिनों को छह वर्ष, चार महीने, और बीस दिन मानते हैं। और यदि यह उनके लिए कोई लाभ पहुँचाता है, तो मैं उन्हें मान लेने देता हूँ; क्योंकि मुझे यह पूर्ण विश्वास है कि 2300 दिन दानियेल की सत्तर सप्ताहों जितने ही अवश्य एक निश्चित समय हैं।” — Signs of the Times, 15 May 1844, p. 82. विलियम मिलर ने प्रतीकात्मक भविष्यद्वाणियों में एक दिन के लिए एक वर्ष के सिद्धांत को किसी अन्य व्याख्यात्मक

विकल्प पर प्राथमिकता दी, उसके दो प्रमुख कारण थे। प्रथम, वह यह समझते थे कि प्रतीकात्मक भाषा का स्वभाव ही सामान्य, शाब्दिक अर्थ ग्रहण करने की अनुमति नहीं देता। पशुओं, सींगों, और विचित्र मिश्रित रूपों से भरे दृश्यों का सीधा-सीधा अर्थ नहीं लिया जा सकता; उनका अर्थ उनके भीतर निहित तुल्यताओं के द्वारा समझा जाना चाहिए। इसी प्रकार, जब ऐसा कोई कालखंड उन्हीं प्रतीकात्मक दृश्यों के भीतर प्रकट होता है, तो उसे भी उसी प्रतिनिधिक स्तर पर समझा जाना चाहिए। दूसरा, मिलर का विश्वास था कि सत्तर सप्ताह और 2300 दिन यीशु मसीह की पहली और दूसरी आगमन-घटनाओं के बीच आंतरिक सामंजस्य का निर्माण करते हैं। सत्तर सप्ताह “तुम्हारी प्रजा और तुम्हारे पवित्र नगर के लिये ठहराए गए” थे (दानियेल 9:24) और सीधे मसीह के प्रथम आगमन तक पहुँचते हैं। 2300 दिन, जो उसी दर्शन का शेष भाग हैं, दूसरे आगमन और पवित्रस्थान के शुद्धीकरण तक पहुँचते हैं। यदि छोटे कालखंड को वर्षों में समझा जाए जबकि बड़े को शाब्दिक दिनों में सीमित कर दिया जाए, तो पूरा संबंध विच्छिन्न हो जाता है। परंतु जब दोनों को वर्ष-दिन सिद्धांत के अंतर्गत पढ़ा जाता है, तब वे एक ही निरंतर मसीह-केंद्रित रेखा का निर्माण करते हैं: एक क्रूस तक पहुँचता है, और दूसरा न्याय तक। मिलर के लिए, इसलिए, 457 ईसा-पूर्व केवल एक सुविधाजनक प्रारंभिक तिथि नहीं थी। यह वह धुरी थी जो दोनों भविष्यद्वाणियों को बाँधती थी। यह एज्रा 7 की वह आज्ञा थी जिसने यरूशलेम को पुनर्स्थापित करने और व्यवस्थित करने का पूर्णाधिकार प्रदान किया, और इसी कारण दानियेल 9 के लिए यही एकमात्र आरंभिक बिंदु था जो यीशु के बपतिस्मा, उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने, और सुसमाचार के जातियों तक फैलने के साथ पूरी शुद्धता से मेल खाता था। क्योंकि दानियेल 8 के 2300 दिनों और दानियेल 9 के 70 सप्ताहों के बीच आंतरिक संबंध था, इसलिए वही तिथि स्वाभाविक रूप से 2300 वर्षों के लिए भी प्रारंभिक बिंदु बन गई। इस प्रकार, 457 ईसा-पूर्व दोनों भविष्यद्वाणियों के लिए खड़ा था: एक छोटी, जो प्रथम आगमन पर समाप्त होती है; और एक बड़ी, जो दूसरे आगमन की प्रत्याशा में समाप्त होती है। इस दृष्टि से मिलर की समय-संबंधी भविष्यद्वाणी की शृंखला कोई मनमाना निर्माण नहीं थी; यह एक व्यवस्थित समन्वय थी। उसने यहूदी व्यवस्था को सुसमाचार-युग से, मसीह के बलिदान को अंतिम न्याय से, और दानियेल की प्रारंभिक समय-भविष्यद्वाणी को प्रकाशितवाक्य की अंतिम घड़ी तक जोड़ दिया। इसलिए 457 ईसा-पूर्व की तिथि एक तकनीकी विवरण से कहीं अधिक थी। यह उनकी संपूर्ण तर्क-प्रणाली की वह बुनियादी कड़ी थी, जिसके बिना वह शृंखला, जैसा वे समझते थे, टूट जाती।”

प्रारंभिक लेखन, पृष्ठ 230: “परमेश्वर ने अपने दूत” —स्वर्गदूत गब्रिएल—“को एक किसान” —विलियम मिलर—“के हृदय पर प्रभाव डालने के लिए भेजा, जिसने बाइबल पर विश्वास नहीं किया था, ताकि उसे भविष्यद्वाणियों की खोज करने के लिए प्रेरित किया जाए। परमेश्वर के दूत उस चुने हुए पुरुष के पास बार-बार आए, उसके मन का मार्गदर्शन करने और उन भविष्यद्वाणियों को उसकी समझ के लिए खोलने के लिए, जो परमेश्वर की प्रजा के लिए सदा से अन्धकारमय रही थीं। सत्य की शृंखला का आरम्भ उसे प्रदान किया गया, और वह कड़ी से कड़ी खोजता हुआ आगे बढ़ाया गया, यहाँ तक कि उसने विस्मय और प्रशंसा के साथ परमेश्वर के वचन को देखा। उसने वहाँ सत्य की एक सिद्ध शृंखला देखी। वह वचन, जिसे उसने अप्रेरित समझा था, अब अपनी शोभा और महिमा में उसकी दृष्टि के सामने खुल गया। उसने देखा कि पवित्रशास्त्र का एक भाग दूसरे भाग की व्याख्या करता है,” —गब्रिएल ने उसे वह विधि दिखाई जिसे हम proof-texting कहते हैं, पंक्ति पर पंक्ति, यहाँ थोड़ा और वहाँ थोड़ा।

गब्रिएल ने उसे सत्य की शृंखला का आरम्भ और प्रमाण-पाठ प्रस्तुत करने की विधि प्रदान की।

विलियम मिलर, एडवेंट रिव्यू एंड सब्बाथ हेरल्ड, 18 अप्रैल, 1854: “पवित्रशास्त्रों के आगे के अध्ययन से मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि अन्यजातियों के प्रभुत्व के सात काल उस समय से आरम्भ होने चाहिए जब यहूदी मनश्शे की बंधुआई के समय एक स्वतंत्र जाति रहना बंद कर गए, जिसे श्रेष्ठतम कालगणक ई.पू. 677 को ठहराते हैं;

कि 2300 दिन सत्तर सप्ताहों के साथ आरम्भ हुए, जिनका आरम्भ श्रेष्ठतम कालगणकों ने ई.पू. 457 से माना है; और कि 1335 दिन, जो नित्य का हटाया जाना और उजाड़ करनेवाली घृणित वस्तु की स्थापना [दानिय्येल 12:11] से आरम्भ होते हैं, उनकी तिथि पोपीय प्रभुत्व की स्थापना से मानी जानी चाहिए, जो अन्यजातीय घृणित वस्तुओं के हटाए जाने के बाद स्थापित हुआ, और जिसे, उन श्रेष्ठतम इतिहासकारों के अनुसार जिनसे मैं परामर्श कर सका, लगभग ई. 508 से दिनांकित किया जाना चाहिए।”

एलेन व्हाइट कहती हैं कि गेब्रियल ने विलियम मिलर को सत्य की श्रृंखला के आरंभ-बिंदु दिए, और विलियम मिलर साक्ष्य देते हैं कि उन्हें दिए गए तीन आरंभ-बिंदु AD508, 677BC, और 457BC हैं। स्वर्गदूत गेब्रियल द्वारा उन्हें इन भविष्यद्वानियों के वे आरंभ-बिंदु दिए गए, जिन्होंने मिडनाइट क्राइ के इतिहास को उत्पन्न किया।

अंतिम छल: भविष्यवाणी की आत्मा का अस्वीकार

चयनित संदेश, पुस्तक 1, पृष्ठ 48: “शैतान . . . निरंतर जाली वस्तुओं को आगे बढ़ा रहा है—ताकि लोगों को सत्य से दूर ले जाए। शैतान का अंतिम धोखा यही होगा कि वह परमेश्वर की आत्मा की गवाही को निष्प्रभावी कर दे।” शैतान का अंतिम धोखा भविष्यवाणी की आत्मा का नाश करना है।

यदि आप इन आधारभूत सत्यों को अस्वीकार करते हैं, तो आप उसी के साथ भविष्यद्वानियों की आत्मा को भी अस्वीकार कर रहे हैं। एलेन व्हाइट 2520 पर अपनी स्वीकृति की मुहर लगाती हैं। 2520 को अस्वीकार कीजिए, और आप बच्चे के साथ स्नान का पानी भी फेंक रहे हैं।

“शैतान . . . निरंतर जाली वस्तु को आगे बढ़ा रहा है—ताकि सत्य से दूर ले जाए। शैतान का अंतिम ही छल यह होगा कि वह परमेश्वर के आत्मा की गवाही को निष्प्रभावी कर दे। ‘जहाँ दर्शन नहीं होता, वहाँ लोग नाश हो जाते हैं’ (नीतिवचन 29:18)।” वह भविष्यद्वानियों के आत्मा को अस्वीकार करने के विषय में बात कर रही है और इसी संबंध में कहती है कि यदि तुम भविष्यद्वानियों के आत्मा को अस्वीकार करते हो, तो जहाँ दर्शन नहीं होता, वहाँ लोग नाश हो जाते हैं। दर्शन क्या है? यदि तुम भविष्यद्वानियों के आत्मा को अस्वीकार करते हो, तो वह कौन-सा दर्शन है जिसका तुम्हें अभाव हो जाता है?

“दर्शन को लिख, और पट्टियाँ पर स्पष्ट लिख दे, ताकि पढ़नेवाला दौड़ सके।” हबक्कुक 2:2 (KJV)। यदि आप भविष्यद्वानियों की आत्मा को अस्वीकार करते हैं, तो आप 1843 के चार्ट को अस्वीकार करने जा रहे हैं; और यदि आप इस चार्ट को अस्वीकार करते हैं, तो आप भविष्यद्वानियों की आत्मा को अस्वीकार कर रहे हैं।

“शैतान कौशलपूर्वक, विभिन्न उपायों से और विभिन्न माध्यमों के द्वारा, परमेश्वर की शेष प्रजा का सत्य साक्ष्य में विश्वास डिगाने का कार्य करेगा। टेस्टिमोनियों के विरुद्ध एक ऐसी घृणा भड़काई जाएगी जो शैतानी होगी।” कभी-कभी हम “शैतानी” को भयावह कर्मों के रूप में समझते हैं, परंतु *Patriarchs and Prophets* में हमें बताया गया है कि शैतान संदेह उत्पन्न करके कार्य करता है। यही भविष्यवाणी की आत्मा और इन आधारभूत सत्यों के विरुद्ध शैतानी आक्रमण है। यह उन मनुष्यों के द्वारा होता है जिन पर हमें विश्वास करना चाहिए, और वही इन संदेहों का संकेत देते हैं।

“गवाहियों के विरुद्ध एक ऐसी घृणा भड़काई जाएगी जो शैतानी होगी। शैतान के कार्य इस उद्देश्य से होंगे कि कलीसियाओं का उन पर से विश्वास डगमगा दिया जाए, क्योंकि यदि परमेश्वर की आत्मा की चेतावनियों, ताड़नाओं और परामर्शों पर ध्यान दिया जाए, तो शैतान के लिए अपनी छलनाओं को प्रवेश कराने और प्राणों को अपने भ्रमों में बाँध लेने का मार्ग इतना स्पष्ट नहीं रह सकता।” Selected Messages, पुस्तक 1, 48.

जब हम इस विषय को समाप्ति पर लाते हैं, तब जब सिस्टर व्हाइट कहती हैं कि भविष्य के विषय में हमें किसी बात से भय करने की आवश्यकता नहीं है, सिवाय इसके कि हम प्रभु की अगुवाई को भूल जाएँ, तो मैं यह कह रहा हूँ कि जिस प्रभु की अगुवाई की वह चर्चा करती हैं, वह टैरिंग टाइम से लेकर बंद द्वार तक का इतिहास है—वह इतिहास जो “द मिडनाइट क्राय” शब्द द्वारा निरूपित है। भविष्य के विषय में हमें किसी बात से भय करने की आवश्यकता नहीं है,

सिवाय इसके कि हम यह भूल जाएँ कि प्रभु ने मिडनाइट क्राय के अनुभव में हमारी अगुवाई कैसे की, और उन शिक्षाओं को भी जो इस अगुवाई से संबद्ध हैं। वे शिक्षाएँ जिन्होंने इस अनुभव को उत्पन्न किया, वे तीन समय-संबंधी भविष्यवाणियाँ हैं, जिनका आरंभ उन तिथियों से होता है जो स्वर्गदूत गैब्रिएल ने विलियम मिलर को दी थीं। भविष्य के विषय में हमें किसी बात से भय करने की आवश्यकता नहीं है, सिवाय इसके कि हम इन शिक्षाओं को भूल जाएँ, जिनमें 2520 भी सम्मिलित है, जिन्होंने उस मिडनाइट क्राय के अनुभव को उत्पन्न किया, जब प्रभु ने मिलराइटों को अनन्त सुसमाचार के चरम-बिंदु के माध्यम से मार्गदर्शित किया।

स्पॉल्डिंग एंड मैगन, पृष्ठ 305-306: "एक बात निश्चित है: वे सेवन्थ-डे एडवेंटिस्ट जो शैतान के ध्वज के अधीन अपना स्थान ग्रहण करेंगे, वे सबसे पहले परमेश्वर के आत्मा की गवाहियों में निहित चेतावनियों और ताड़नाओं में अपना विश्वास त्याग देंगे।" आप यदि नींवों को अस्वीकार करते हैं, तो आप भविष्यवाणी की आत्मा को अस्वीकार कर रहे हैं। यदि आप भविष्यवाणी की आत्मा को अस्वीकार करते हैं, तो आप नींवों को अस्वीकार कर रहे हैं। वे साथ-साथ चलते हैं। जहाँ भविष्यवाणी की आत्मा नहीं होती, वहाँ दर्शन नहीं होता।

अधिक पूर्ण समर्पण और अधिक पवित्र सेवा के लिए बुलाहट दी जा रही है, और दी जाती रहेगी। जो कुछ लोग अभी शैतान के सुझावों को व्यक्त कर रहे हैं, वे सुधि में आएँगे। ऐसे भी लोग हैं जो विश्वास के महत्त्वपूर्ण पदों पर हैं, परन्तु इस समय के सत्य को नहीं समझते। उन्हें यह संदेश दिया जाना चाहिए। यदि वे इसे ग्रहण करें, तो मसीह उन्हें स्वीकार करेगा और उन्हें अपने साथ सहकर्मी बनाएगा। परन्तु यदि वे इस संदेश को सुनने से इन्कार करें, तो वे अपने को अन्धकार के राजकुमार के काले झंडे के अधीन खड़ा करेंगे।

मुझे यह कहने की आज्ञा दी गई है कि इस समय के लिए बहुमूल्य सत्य मानवीय मनो पर अधिकाधिक स्पष्ट रूप से प्रकट हो रहा है। एक विशेष अर्थ में पुरुषों और स्त्रियों को मसीह का मांस खाना और उसका लहू पीना है। समझ का विकास होगा, क्योंकि सत्य निरंतर विस्तार का सामर्थ्य रखता है। सत्य के दिव्य उद्गमकर्ता उन लोगों के साथ, जो उसे जानने के लिए आगे बढ़ते रहते हैं, अधिक निकट और और भी निकट संगति में आएँगे। जब परमेश्वर के लोग उसके वचन को स्वर्ग की रोटी के रूप में ग्रहण करेंगे, तब वे जान लेंगे कि उसका प्रगट होना भोर के समान निश्चित है। वे आत्मिक सामर्थ्य प्राप्त करेंगे, जैसे भोजन किए जाने पर शरीर शारीरिक सामर्थ्य प्राप्त करता है।

हम प्रभु की उस योजना को आधा भी नहीं समझते, जिसके द्वारा उसने इस्राएल की संतानों को मिस्री दासत्व से निकालकर जंगल के मार्ग से कनान में पहुंचाया।

"जब हम सुसमाचार से चमकने वाली दिव्य किरणों को एकत्र करते हैं, तब हमें यहूदी व्यवस्था के विषय में अधिक स्पष्ट अंतर्दृष्टि प्राप्त होगी, और उसके महत्त्वपूर्ण सत्यों के प्रति हमारी सराहना अधिक गहरी होगी। सत्य का हमारा अन्वेषण अभी अपूर्ण है। हमने प्रकाश की केवल कुछ ही किरणें एकत्र की हैं। जो प्रतिदिन वचन के विद्यार्थी नहीं हैं, वे यहूदी व्यवस्था की समस्याओं का समाधान नहीं करेंगे। वे उन सत्यों को नहीं समझेंगे जो मन्दिर-सेवा के द्वारा सिखाए गए थे। परमेश्वर की अपनी महान योजना के विषय में सांसारिक समझ के कारण उसके कार्य में बाधा पहुँचती है। भविष्य का जीवन उन व्यवस्थाओं के अर्थ को प्रकट करेगा, जिन्हें मसीह ने, मेघ-स्तम्भ में आच्छादित होकर, अपने लोगों को दिया था।" Spalding and Magan, 305-306.

वे एडवेंटिस्ट जो पशु की छाप ग्रहण करते हैं, शैतान के झंडे के अधीन खड़े होकर, सबसे पहले भविष्यवाणी की आत्मा को अस्वीकार करते हैं।

इस अनुच्छेद में दो वर्ग हैं: वे जो यहोवा को जानने के लिए आगे बढ़ते हैं, उसका मांस खाते और उसका लहू पीते रहते हैं, और परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते रहते हैं; और वे जो ऐसा नहीं करते। सत्य का विकास समाप्त नहीं हुआ है; वे पवित्रस्थान की सेवा के विषय में ऐसी बातें कहेंगे जो अभी तक नहीं कही गई हैं। वे मसीह के समय में व्यवस्था-काल के परिवर्तन पर बल देंगे, जो मिलेराइट समय में हुए परिवर्तन का पूर्वाभास कराता है, और उस व्यवस्था-काल की ओर संकेत करता है जब मसीह मृतकों के न्याय से जीवितों के न्याय में प्रवेश करता है। वे

पवित्रस्थान के विषय में और इस बात के विषय में कहने को बहुत कुछ रखेंगे कि व्यवस्था-कालों के इन परिवर्तनों में प्रभु अपने आत्मा के उंडेले जाने के द्वारा अपनी गतियों को किस प्रकार चिह्नित करता है।

दो और उद्धरण, और हम लगभग समाप्त हो चुके हैं।

वे सातवें-दिन एडवेंटिस्ट जो मध्यरात्रि की पुकार को अस्वीकार करते हैं, मार्ग से गिर पड़ते हैं, और प्रभु के उन मार्गदर्शनों तथा सिद्धान्तगत शिक्षाओं को ठुकरा देते हैं जो मध्यरात्रि की पुकार के इतिहास को उत्पन्न करती हैं। यही वह बात है जिससे हमें भय करना है—उन शिक्षाओं को अस्वीकार करना और उस अनुभव को न समझना। ऐसा करके, हम भविष्यद्वाणी की आत्मा को अस्वीकार कर रहे हैं।

सिस्टर व्हाइट 2520 पर अपनी स्वीकृति की मुहर लगाती हैं। हम दिखाएँगे कि 1843 के चार्ट पर स्थित अन्य सत्तों पर भी वह अपनी स्वीकृति की मुहर कैसे लगाती हैं।

संसार के अंत में, जब यह सब हमारे इतिहास में अनन्त सुसमाचार की पराकाष्ठा तक पहुँच जाएगा, तब एडवेंटवाद उस तीन-चरणीय परीक्षा-प्रक्रिया का सामना करेगा जिसका पूर्वाभास विलियम मिलर के अनुभव में देखा गया है।

विलियम मिलर ने तीन गलतियाँ कीं: (1) उसने मध्यरात्रि की पुकार को अस्वीकार किया और नीचे की दुष्ट दुनिया की ओर जाने वाले मार्ग से गिर पड़ा। (2) उसके बाद उसने मानवीय प्रभाव, अर्थात् जोशुआ हाइम्स, पर भरोसा किया। (3) उसने सब्त को अस्वीकार किया।

एक प्रश्न उठा: "क्या उसने सब्त को अस्वीकार किया या पवित्रस्थान को?" उस समयावधि में जो शिक्षा पृथ्वी के पवित्रस्थान से स्वर्गीय पवित्रस्थान की ओर परिवर्तित हुई, संभव है कि मिलर ने उसे पूर्णतः न समझा हो। जब एलेन व्हाइट को परम-पवित्र स्थान में ले जाया गया, तब उसने वाचा के सन्दूक में दस आज्ञाओं को देखा, और सब्त की आज्ञा के चारों ओर एक पवित्र आभा थी।

जिस वस्तु को मिलर ने अस्वीकार किया, वह परमेश्वर की व्यवस्था—सब्त—था। अतः मिलर ने मध्यरात्रि की पुकार को अस्वीकार किया, फिर मनुष्य-बल पर निर्भर हुआ, और तब पशु की छाप को ग्रहण किया। यही बात संसार के अंत में पुनः दोहराई जाती है।

टेस्टिमोनीज़, खंड 5, पृष्ठ 211: "यहाँ हम देखते हैं कि कलीसिया—प्रभु का पवित्रस्थान—परमेश्वर के क्रोध के प्रहार को अनुभव करने में पहली थी। वे प्राचीन पुरुष, जिन्हें परमेश्वर ने महान ज्योति दी थी और जो लोगों के आत्मिक हितों के अभिरक्षकों के रूप में खड़े हुए थे, अपने विश्वास के साथ विश्वासघात कर चुके थे।" वह यहजेकेल 8 और 9, अर्थात् मुहर लगाने के विषय पर टिप्पणी कर रही हैं। सिस्टर व्हाइट कहती हैं कि यहजेकेल 9 में मुहर लगाया जाना वही है जो प्रकाशितवाक्य 7 में मुहर लगाया जाना है। वह 144,000 पर मुहर लगाए जाने की समयावधि की बात कर रही हैं। वह कहती हैं कि जिन्हें अभिरक्षक होना था, उन्होंने अपने विश्वास के साथ विश्वासघात किया था।

"उन्होंने यह स्थिति ग्रहण कर ली थी कि हमें चमत्कारों और परमेश्वर की सामर्थ्य के उस विशिष्ट प्रगटीकरण की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए जैसी पूर्वकाल में होती थी। समय बदल गया है।" उनकी पहली भूल यह थी कि उन्होंने मध्यरात्रि के पुकार का विरोध किया, यह कहते हुए, "मध्यरात्रि के पुकार के इस इतिहास में जो कुछ हुआ, वह फिर से नहीं दोहराया जाता।" वे पथ से गिरते जा रहे हैं।

"ये वचन उनके अविश्वास को दृढ़ करते हैं, और वे कहते हैं: प्रभु न तो भलाई करेगा, न ही बुराई करेगा। वह अपनी प्रजा पर न्याय करने के लिए अत्यन्त दयालु है। इस प्रकार 'शांति और सुरक्षा' उन मनुष्यों की पुकार है जो फिर कभी अपनी वाणी तुरही के समान ऊँची नहीं करेंगे, ताकि परमेश्वर की प्रजा को उनके अपराध और याकूब के घराने को उनके पाप दिखाएँ। ये गूँगे कुत्ते, जो भौंकना नहीं चाहते थे, वही अपमानित परमेश्वर के धर्मसंगत प्रतिशोध का अनुभव करते हैं। पुरुष, युवतियाँ, और छोटे-छोटे बच्चे सब के सब एक साथ नाश हो जाते हैं।"

टेस्टिमोनीज़, खंड 5, 211.

यिर्मयाह ने विलियम मिलर की दूसरी विफलता के विषय में कहा, “यहोवा यों कहता है: शापित है वह मनुष्य जो मनुष्य पर भरोसा रखता है, और शरीर को अपना भुजबल बनाता है, और जिसका हृदय यहोवा से हट जाता है।” यिर्मयाह 17:5 (KJV)। यदि तुम किसी मनुष्य पर भरोसा रखते हो, तो तुम्हारा हृदय यहोवा से हट जाता है।

अंत में पहली अस्वीकृति आधी रात की पुकार है, जो परमेश्वर की शक्ति के प्रकट होने की पुनरावृत्ति है। दूसरी है शरीर पर आश्रित होना। तीसरी है रविवार का कानून।

केवल दो ही वर्ग हो सकते हैं। प्रत्येक दल पर स्पष्ट रूप से या तो जीवते परमेश्वर की मुहर लगी हुई है, अथवा पशु या उसकी मूरत का चिन्ह। आदम का प्रत्येक पुत्र और पुत्री अपने प्रधान के रूप में या तो मसीह को, या बरअब्बा को चुनता है। और जो सब अपने को अविश्वासी पक्ष में रखते हैं, वे शैतान के काले ध्वज के अधीन खड़े हैं, और उन पर मसीह को अस्वीकार करने तथा उसका अपमानपूर्वक उपयोग करने का दोष लगाया जाता है। उन पर यह भी आरोप है कि वे जान-बूझकर जीवन और महिमा के प्रभु को क्रूस पर चढ़ा रहे हैं। रिव्यू एंड हेराल्ड, 30 जनवरी, 1900।

एक बात निश्चित है: वे सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट जो शैतान के ध्वज के अधीन अपना पक्ष ग्रहण करते हैं, सबसे पहले भविष्यवाणी की आत्मा में अपना विश्वास त्याग देंगे।

ऐडवेंटवाद् उस तीन-चरणीय परीक्षा-प्रक्रिया को दोहराता है जिसमें विलियम मिलर असफल रहे। परन्तु स्वर्गदूत मिलर को उठाने और उन्हें उनके उद्धारकर्ता के पास घर ले जाने के लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं। जो ऐडवेंटवादी पशु की छाप को ग्रहण करते हैं, उनके लिए वे प्रतीक्षा करने वाले स्वर्गदूत नहीं हैं।

“बार-बार मुझे यह दिखाया गया है कि परमेश्वर की प्रजा के अतीत के अनुभवों को मृत तथ्य नहीं समझा जाना चाहिए। हमें इन अनुभवों के अभिलेख के साथ ऐसा व्यवहार नहीं करना है जैसा हम पिछले वर्ष की पंचांग-पुस्तिका के साथ करते हैं। इस अभिलेख को स्मरण में रखा जाना है, क्योंकि इतिहास अपने आप को दोहराएगा।” Publishing Ministry, 175.

हमें मध्यरात्रि की पुकार को स्मरण रखने की आवश्यकता क्यों है? क्योंकि इतिहास की पुनरावृत्ति होने जा रही है। इस इतिहास में, जो संदेश हिलाए जाने का कारण बनेगा, वह 2520 और 2300 है; इसी के कारण लोग कलीसियाओं से बाहर निकल जाएंगे।

पर क्या यह इतिहास, मध्यरात्रि की पुकार, वास्तव में दोहराया जाने वाला है, या यह केवल कोई इतिहास मात्र है? इस अगले उद्घरण पर ध्यान दीजिए:

एक संसार है जो दुष्टता में, छल और भ्रम में, यहाँ तक कि मृत्यु की छाया में पड़ा हुआ है,—सोया हुआ, सोया हुआ। कौन हैं जो उन्हें जगाने के लिए आत्मा की प्रसव-पीड़ा अनुभव कर रहे हैं? कौन-सी वाणी उन तक पहुँच सकती है? मेरा मन भविष्य की ओर ले जाया गया, जब संकेत दिया जाएगा, “देखो, दूल्हा आता है; उससे भेंट करने के लिए निकलो।” परन्तु कुछ लोग अपने दीपकों की पूर्ति के लिए तेल प्राप्त करने में देर कर चुके होंगे, और तब वे बहुत देर से यह पाएँगे कि चरित्र, जिसका प्रतिनिधित्व तेल करता है, हस्तांतरित नहीं किया जा सकता। रिव्यू ऐण्ड हेराल्ड, 11 फ़रवरी, 1896.

मध्यरात्रि की पुकार का यह इतिहास अक्षरशः पुनः दोहराया जाता है।

एलेन व्हाइट समझती थीं कि 2520 एक वैध समय-संबंधी भविष्यवाणी थी और यह कि प्रभु ने इसका उपयोग विलम्ब के समय को उत्पन्न करने के लिए किया, उस निराशा को उत्पन्न करने के लिए, जिसने वह अनुभव निर्मित किया जिसने पुरुषों और स्त्रियों को विश्वास के द्वारा मसीह के साथ परमपवित्र स्थान में प्रवेश करने के लिए तैयार किया।

हमने अभी तक बाइबल से 2520 को सिद्ध करने का प्रयास नहीं किया है। हबकुक की दो पटियाओं के इस अध्ययन में, हम पहले यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि एलेन व्हाइट उन सिद्धांतों का समर्थन करती हैं जिन्हें आज एडवेंटिज़्म द्वारा अस्वीकार किया जा रहा है; तत्पश्चात हम बाइबिलीय अध्ययन की ओर बढ़ेंगे।